सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०७८ फरवरी २०२२

ISSN-2321-3981

वीणावादिनी वर दे!
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर नव स्वर दे!

₹ २०

कविता

बच्चों का कैसा हो बसन्त

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

कुत्ता, बिल्ली, बन्दर, सियार।
चिड़ियों का है कलरव अपार।
गुनगुनी धूप का चमत्कार।
पूछे मोहन, आशा, अनन्त।।
बच्चों का कैसा हो बसन्त

फूले गेंदा, गुलाब फूले।
फूली सरसों, कनेर फूले।
झूले किसान, मन के झूले।
आमों में बौराई सुगन्ध।।
बच्चे खेलें, गिल्ली डंडा।
डंडे पर टाँग दिया झंडा।
है पास मोबाईल का फंडा।
बन गया अनोखा बनावन्त।।

बाबा लाए अमरूद-बेर।
बच्चों को हैं वे रहे टेर।
है पूजन में हो रही देर।
बैठे कब से हैं साधु-सन्त।।
बच्चे कपड़े पहने पीले,
सिलवाए हैं ढीले-ढीले,
वे खेलकूद में फुर्तीले-
फिरते हैं बनकर वे बसन्त।।
माँ पकवान बनाती हैं,
दीदी मिष्ठान्न सजाती हैं,
दादीजी कथा सुनाती हैं,
खुशियाँ बिखरी हैं दिग् दिगन्त।।
बच्चों का कैसा हो बसन्त।।

– हरदोई (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०७८ ▪ वर्ष ४२
फरवरी २०२२ ▪ अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

माघ का महीना है, वसंत पंचमी के साथ ही ऋतुराज के आगमन की तैयारियाँ आरंभ होंगी। वस्तुत: वसंत पंचमी माँ सरस्वती के प्रकट होने का दिन है ऐसी मान्यता है। कालान्तर में यह दिवस सरस्वती के अनूठे साधक महाकवि निराला का जन्मदिन भी माना गया। मैं आज आपको इन दो प्रसंगों को एक विशेष संदर्भ में प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

बच्चो! यदि आपसे कोई पूछे कि निराला की ऐसी कौन–सी रचना है जिसे सबसे अधिक बच्चों ने पढ़ा, सुना या गाया है? तो निश्चित रूप से आपका उत्तर होगा सरस्वती वंदना **'वीणावादिनी वर दे'**। यह एक कालजयी रचना है। रचयिता ने इसे किस भाव से लिखा होगा यह विद्वानों के विमर्श का विषय हो सकता है पर कालजयी रचनाएँ, हर समय में अपनी विशेष प्रासंगिकता के साथ जुड़ जाती है।

स्वतंत्रता के भावों से परिपूर्ण निराला की यह सरस्वती वंदना अन्य सरस्वती वंदनाओं से अलग है। यह वर्ष भारत का **'स्वतंत्रता का अमृत वर्ष'** है। जब मैं **प्रिय स्वतंत्र रव, अमृतमंत्र नव, भारत में भर दे।** पंक्ति पढ़ता हूँ तो मुझे लगता है यह वर्तमान भारत के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी इसके गीत रचनाकाल यानि परतंत्र भारत के समय रही होगी। यहाँ पूरे वंदना गीत में की व्याख्या न करते हुए जो ऐसे ही ऊर्जामय भावों से भरा है मैं अंतिम पंक्तियों पर आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा। कवि ने लिखा **नव नभ के नव विहग वृन्द को, नव पर नव स्वर दे।** यह नव विहग (पंछी) कौन है? मुझे लगता है यह आप बढ़ते बच्चों के लिए है। कवि की माता सरस्वती से प्रार्थना है कि आप नव नभ, यानि नया आकाश, नई ऊँचाइयों की ओर नए पंखों के साथ गाते हुए अर्थात आनंद में डूबकर उड़ान भरें।

नई खोजों, नई संकल्पनाओं, नई तकनीकि का प्रयोग करते हुए आप जैसे **'नव विहगों'** को ज्ञान एवं विज्ञान रूपी पंखों के साथ नई उमंग, नई ऊर्जा लेकर नई ऊँचाइयों को छूने की बात इस वंदना में है और अपनी संतानों में यह चेतना ही किसी भी राष्ट्र के लिए **'अमृत–तत्व'** है।

आइये, निराला की इन निराली पंक्तियों के साथ अपने राष्ट्र के निराले नव उत्कर्ष हेतु हम **'नव गति, नवलय'** साधने में अग्रणी बनें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- मोबाईल -राजीव सक्सेना ०५
- गूगल भैया -डॉ. आरती स्मित १०
- नईनवेली से उलझी -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' १८
- पहला अनुभव -डॉ. के. रानी २६
- अम्मू -पद्मिनी अबरोल ३८

छोटी कहानी

- बाल जंगल में बाशरूम -शिखरचन्द जैन ०७
- उत्सव की तैयारी -डॉ. विमला भंडारी १३
- गले में घंटी -टीकमचन्दर ढोडरिया १६
- पृथ्वीग्रह का एलियन -विनीता सिंह चौहान ३५
- धरती का इन्द्रधनुष -नीलम राकेश ३६
- चींटी खेले मोनोपाली -रोचिका अरुण शर्मा ४३

आलेख

- राष्ट्रचेतना के कवि : गायक प्रदीप -डॉ. रामसिंह यादव ३०

लघु आलेख

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण -सीताराम गुप्त ०८

कविता

- बच्चों का हो कैसा बसंत -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- मेल जोल जीवन -डॉ. शेषपालसिंह 'शेष' ०९
- तात्या टोपे -चंद्रप्रकाश पटसारिया २४
- कितने दाने कितने पक्षी -शिवमोहन यादव २९
- जीवों के प्राण बचाएँ -उदय मेघवाल 'उदय' ३२
- बसंत आया -राममोहन शर्मा ३७
- पंचतत्व -अंकित शर्मा 'इषुप्रिय' ४२
- नदी किनारे गाँव उगेंगे -रामकरन ४५
- सर्दी है ऋतुओं की रानी -लक्ष्मीप्रसाद गुप्त किंकर ४७
- बसंत -सुरेशचंद्र 'सर्वहारा' ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १४
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी २१
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २२
- आपकी पाती - २९
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - ३४
- छ: अंगुल मुस्कान - ४४
- पुस्तक परिचय - ४६
- शिशु गीत -शोभनाथ लाल ४७
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ४८
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी ४९

प्रसंग

- जब आजाद ने सर पर.. -डॉ.ऋषिमोहन श्रीवास्तव २८

बौद्धिक क्रीड़ा

- बढ़ते क्रम में -देवांशु वत्स २८

चित्रकथा

- अनूठी वजह -देवांशु वत्स १७
- देना है तो -संकेत गोस्वामी २५
- उल्टी गंगा -देवांशु वत्स ३३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

मोबाईल

– राजीव सक्सेना

संभव के शिक्षक उसे ट्यूशन पढ़ाकर चले गए थे। देर तक पढ़ने और गृहकार्य निपटाने के कारण अब उसे थकान होने लगी थी।

वह सोचने लगा–'कुछ मनोरंजन किया जाए।'

लेकिन शाम हो चुकी थी और धीरे–धीरे रात का धुँधलका भी घिरने लगा था। ऐसे में वह खेलने के लिए किसी बगीचे या मैदान में तो जा नहीं सकता था न ही किसी मित्र के घर। वैसे भी रात के समय घर से बाहर जाने के लिए पिता जी की ओर से कठोर मनाही थी।

उसकी दृष्टि बैठक में लगे बड़े से टी. वी. की स्क्रीन पर गई। लेकिन दादा जी दिल के मरीज थे इसलिए संभव टी. वी. ऑन कर शोर भी उत्पन्न नहीं करना चाहता था।

''ओफ! क्या करूँ?'' वह मन मारकर सोचने लगा।

''आइडिया! क्यों न मोबाईल पर कोई खेल ही खेला जाए...।'' अचानक यह सोचकर संभव एकदम उत्साहित हो गया।

''माँ! कृपया!! जरा, मुझे अपना मोबाईल देना। थोड़ी देर खेल खेलूँगा...।''

''नहीं! पिता जी देखेंगे तो नाराज होंगे। मैं खाना बना रही हूँ। बस आधा घंटा लगेगा....।''

''लेकिन तब तक मैं क्या करूँ? कृपया माँ! बस थोड़ी देर ही तो खेल खेलूँगा, अपना मोबाईल दे दीजिए...।''

''ठीक है, ले लो। ध्यान रहे तुम्हारे पिता जी भी आते ही होंगे....।'' माँ ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए संभव को अपना मोबाईल थमा दिया।

खेल सचमुच बड़ा मजेदार था और संभव को काफी पसन्द भी था।

मोबाईल पर खेल खेलते हुए संभव को समय का ध्यान नहीं न रहा। वह बड़ी तन्मयता से खेल रहा था और एक के बाद खेल के चरण पार करता जा रहा था।

आखिर वहीं हुआ जिसका डर था।

पिता जी बड़ी शांति से घर के भीतर आ गए। खेल खेलने में मग्न संभव को उनके कदमों की आहट भी न सुनाई दी।

संभव को मोबाईल पर जुटा देखकर पिता जी की त्योंरियाँ एकदम चढ़ गई। मोबाईल पर संभव पर खेल खेलना तनिक भी पसन्द नहीं था।

पिता जी एकदम भड़क गए– ''यह क्या संभव? जब देखो तब तुम मोबाईल पर खेल ही खेलते रहते हो... पढ़ने–लिखने पर जरा भी ध्यान नहीं है तुम्हारा। पिछली परीक्षा में गणित में कितने कम अंक थे तुम्हारे? बिल्कुल भूल गए... पड़ोस के– अर्चित को देखो–विद्यालय ही नहीं पूरे जिले में प्रथम आया है वह। एक तुम हो... लाओ, मोबाईल मुझे दो।''

''रहने भी दीजिए कुछ देर पहले ही तो लिया है उसने।'' माँ ने संभव का बचाव करते हुए कहा।

''शिखा! अपने लाड़ले को बिगाड़ने में तुम भी पीछे नहीं हो।'' इस बार पिता जी ने माँ को डाँट

लगाते हुए कहा।

''बस पिता जी! दो मिनट! खेल पूरा ही होने वाला है। पूरा होते ही मोबाईल मैं आपको दे दूँगा।'' संभव बोला।

''नहीं!'' पिता जी ने संभव से मोबाईल लेते हुए कहा।

बेचारा संभव!

रूआंसा होते हुए गाल फुलाकर बैठ गया। माँ को डाँट पड़ने का दु:ख उसे भी था।

''संभव! बेटा संभव!! जरा, इधर आना।'' अपने कमरे से दादा जी ने संभव को आवाज दी।

''आया दादा जी!''

संभव दादा जी के कमरे में पहुँचा तो वे बोले– ''संभव! देखो तो जरा! मेरा मोबाईल काम ही नहीं कर रहा है।''

''अभी देखता हूँ।'' यह कहकर संभव ने दादा जी के मोबाईल की जाँच–पड़ताल शुरू कर दी।

''आपका मोबाईल हैंग हो गया है। कुछ फाईलें डिलीट करनी होंगी।''

''ठीक है, जो भी करना है करो। मेरा मोबाईल चालू कर दो।'' दादा जी ने बड़ी व्यग्रता के साथ कहा।

संभव अब दादा जी के मोबाईल में जुट गया।

तभी संभव के पिता जी भी दादा जी के कमरे में आ गए।

संभव को फिर से मोबाईल में जुटा देखकर वे एकदम आग–बबूला हो गए। बोले– ''तुम सुधरोगे नहीं संभव? फिर मोबाईल लेकर शुरू हो गए।''

''बस भी करो अरुण! मैं काफी देर से नाटक देख रहा हूँ। संभव मेरे कहने पर ही मेरा हैंग हुआ मोबाईल ठीक कर रहा है।''

''यह बात नहीं है बाबू जी! जब देखो तब यह मोबाईल में जुटा रहता है।''

''तुम स्वयं भी तो हर समय मोबाईल पर बतियाते रहते हो। बच्चे हमारा ही तो अनुकरण करते हैं, वे वही करते हैं जो हमें करते हुए देखते हैं। इसमें उनका क्या दोष? एक बात और, यदि बच्चे मोबाईल या तकनीक से नहीं जुड़ेंगे तो फिर देश को योग्य इंजीनियर, डॉक्टर और वैज्ञानिक कहाँ से मिलेंगे?''

''लीजिए दादा जी! आपका मोबाईल अब बिल्कुल ठीक काम कर रहा है।'' संभव ने दादा जी को मोबाईल थमाते हुए कहा।

''शाबाश गुरु जी!'' दादा जी ने संभव की पीठ थपथपाते हुए कहा।

''गुरु जी?'' संभव ने आश्चर्य चकित होकर कहा।

''हाँ, गुरु जी!'' दादा जी ने एक शरारती मुस्कान के साथ कहा– ''आखिर बच्चे हम पुराने जमाने के बूढ़ों से बहुत आगे हैं न! हम तकनीक के मामले में उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। अब इस मोबाईल को ही लो। यह तो तुमने इसे चालू कर दिया मैं तो इसके चालू होने की आशा ही छोड़ चुका था और काफी प्रयत्न के बाद भी ऐसा नहीं कर पाया। अब बताओ, कौन किसका गुरु हुआ?''

''बस एक बात और कहूँगा संभव! मोबाईल के अलावा मैदान में जाकर खेलना भी चाहिए। मित्रों से मिलना–जुलना और गप्प लड़ाने के साथ–साथ अच्छी किताबें पढ़कर भी मनोरंजन किया जा सकता है। कभी–कभी हम बूढ़ों के पास भी बैठा करो। हमारे पास तुम्हें सुनाने के लिए बहुत से मजेदार किस्से हैं।''

''जी, दादा जी।'' दादा जी ने जब प्यार से संभव के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा तो वह बस इतना ही कह पाया।

उधर पिता जी भी उनकी बात सुनकर अनायास मुस्करा दिए। आखिर जो बात वे संभव को डाँट–डपट से भी न समझा सके थे वह संभव के दादा जी ने बड़े ही सहज ढंग से समझा दी थी।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

छोटी कहानी

बाल जंगल में वॉशरूम

– शिखर चंद जैन

अंशुल को सुबह से दूसरी बार डाँट पड़ चुकी थी। ९ बजने वाले थे और उसका नहाने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा था। सर्दी के मौसम में उसे पानी छूने से भी डर लगता था। तभी उसकी नजर बाहर अठखेलियाँ करती गौरैया, कबूतर, बुलबुल और दूसरे पक्षियों पर पड़ी। उसने धीरे से अपने पास बैठी बड़ी बहन प्रज्ञा से हँसते हुए पूछा– ''दीदी! चिड़ियाघर और जंगल में भी वाशरूम होते हैं क्या? फिर ये पशु–पक्षी, इंसेक्ट्स, रेप्टाइल्स या अन्य जानवर खुद को कैसे साफ सुथरा रखते होंगे?''

दीदी मेधावी छात्रा थी और बी. एड. करके टीचर बनने के लिए आगे की पढ़ाई कर रही थी। उसने कहा– ''अंशुल! इन्हें वॉशरूम की आवश्यकता नहीं होती। असल में प्रकृति ने सब प्राणियों के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुसार ठीक व्यवस्था की है और सभी प्राणियों में उनकी हाइजीन मेंटेन करने की आदत को विकसित किया है। गाय, भैंस, बिल्ली, कुत्ते, चूहे अधिकांश समय अपने शरीर को चाटते रहते हैं। कई इंसेक्ट अपने एंटीना को आपस में रगड़कर उनकी साफ–सफाई करते रहते हैं। सभी जानवर अपने रोंए, पंख या त्वचा को साफ करते रहते हैं। इसी तरह वे अपने शरीर से इंसेक्ट, पत्तियाँ, धूल–मिट्टी, गंदगी, तिनके या पैरासाइट्स भी साफ करते रहते हैं। अंशुल ने पूछा– ''तो दीदी! पक्षी अपनी हाइजीन कैसे मेंटेन करते हैं?

प्रज्ञा ने बताया, पक्षी अपने पंखों को अधिकांश फड़फड़ाकर चाटते रहते हैं। वे अपने पंखों की छंटाई करते रहते हैं ताकि उनमें छिपे पैरासाइट्स आदि से मुक्ति मिले और पंखों का आकार व वजन सही रखकर उड़ने में आसानी हो सके। साथ ही अपने पंखों को वाटरप्रूफ बनाने के लिए वे अपनी यूरोपिजियल ग्लैंड से प्रीन ऑयल का उत्सर्जन करते हैं और कमजोर पड़े पंखों को हटाते रहते हैं।

उत्सुक अंशुल ने पूछा, तो ये पक्षी कई बार धूल में लिपट कर गंदे क्यों होते रहते हैं?

प्रज्ञा बोली– ''गंदे नहीं साफ होते हैं। कई बार गौरैया, कबूतर, कौवे व कुछ अन्य पक्षी धूल स्नान भी करते हैं। जेब्रा और कभी–कभी गधा भी धूल में लोटपोट होकर डस्टबॉथ से स्वयं को साफ करता है। जबकि कुछ पक्षी एन्टिंग का सहारा भी लेते हैं।''

''एन्टिंग? ये क्या होता है?'' अंशुल ने आश्चर्य से पूछा प्रज्ञा ने बताया– ''एन्टिंग के अंतर्गत पक्षी चीटियों को अपने पंखों पर रगड़ते हैं या फिर पंख खोल कर उनमें चींटियों को रेंगते हुए डेड सेल्स आदि खाने देते हैं।''

अंशुल ने पूछा– ''फिर तो पशु–पक्षियों के पास दूसरे इनोवेटिव तरीके भी होते होंगे साफ–सफाई के?''

''हाँ! कई जानवर सोशल ग्रूमिंग की पद्धति अपनाते हैं इसमें वे एक–दूसरे के शरीर की साफ–सफाई करते हैं जैसे बंदर। जानवर अपनी साफ–सफाई के लिए अपने सिर, पंजों, नाखून, चोंच, जीभ और पूँछ का उपयोग करते हैं। कुछ जीवों के पास सफाई के लिए विशेष अंग होते हैं। जैसे स्टारफिश के पास संडसी जैसा अंग पेडिसिलारिया। इनकी मदद से अपनी चमड़ी पर उपस्थित किसी भी फॉरेन पार्टिकल को हटा सकती है।'' प्रज्ञा ने बताया। अंशुल ने पूछा– ''दीदी! हम जैसे शादी–ब्याह में जाने के लिए या दूसरों को प्रभावित करने के लिए कई बार तैयार होते हैं, वैसे जानवर भी होते हैं क्या?''

दीदी बोली– ''बिल्कुल! पशु–पक्षी ग्रूमिंग सिर्फ साफ–सफाई के लिए नहीं बल्कि प्यार के इजहार के संकेत देने और अपने साथियों को प्रसन्न करने के लिए भी करते हैं। कई सामाजिक जानवर सफाई और स्वयं को सफाई का काम सोशल बॉन्डिंग के लिए भी करते हैं। जैसे बैबून, कैपुचीन आदि। चिंपांजी एक–दूसरे की ग्रूमिंग पूरी तन्मयता के साथ करते हैं। बंदरों को तुमने एक–दूसरे की जुएँ निकालते देखा होगा।''

''गजब है भाई! फिर तो मुझे भी नहाना होगा। वर्ना माँ बोलेगी तेरे से तो ये चील–कौवे अच्छे, जो साफ–सुथरे रहते हैं।'' अंशुल फुर्ती से पलंग से उठा और सीधा वॉशरूम की तरफ लपका।

– कोलकाता (पं. बं.)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– सीताराम गुप्त

पिछले दिनों की बात है। किसी आवश्यक काम से बाहर जाने के लिए जैसे ही घर से निकला थोड़ी दूर चलने पर ही एक बिल्ली मेरे आगे से निकल गई। बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना बहुत अशुभ माना जाता है अत: वापस घर लौट आया। कुछ देर बाद पुन: बाहर जाने के लिए निकला लेकिन मन में एक शंका व्याप्त थी कि काम नहीं बनेगा सो नहीं ही बना क्योंकि बिल्ली रास्ता काट गई थी। जिनसे मिलना था वह साहब मिले ही नहीं। पूछताछ करने पर पता चला कि वे सज्जन मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे किन्तु मेरे समय पर न पहुँचने के कारण किसी अन्य आवश्यक काम से कहीं अन्यत्र चले गए।

मैं बिल्ली के द्वारा रास्ता काटे जाने के कारण रुक गया था और देरी हो गयी था अत: काम नहीं हुआ। विश्लेषण करने पर मैंने पाया कि काम वास्तव में मुझसे देरी हो जाने के कारण नहीं हुआ था न कि बिल्ली द्वारा रास्ता काटे जाने के कारण। बिल्ली का कोई दोष नहीं था। दोष था तो मेरा क्योंकि मेरे अंदर एक अंधविश्वास भरा हुआ था कि बिल्ली द्वारा रास्ता काटे जाने पर काम में विघ्न पैदा होना निश्चित है। मैं रुक गया इसलिए देर हो गयी। यदि मैं बिल्ली के द्वारा रास्ता काटे जाने के बाद भी नहीं रुकता और चला जाता तो मेरा काम अवश्य ही हो जाता। मैंने निर्णय किया कि मैं बिल्ली के रास्ता काटे जाने की घटना के दुष्प्रभाव की जाँच–परख करके देखूँगा।

कुछ ही दिनों के बाद फिर ऐसा संयोग हुआ कि जैसे ही किसी आवश्यक काम से मैं घर से बाहर निकला एक बिल्ली फिर मेरा रास्ता काट गई। मैंने निर्णय किया कि बिल्ली के रास्ता काटे जाने के बाद भी आज मैं बिलकुल नहीं रुकूँगा और मैं बिना वापस घर गए सीधा अपने गंतव्य स्थान पर जा पहुँचा। मैं दस मिनट पहले ही वहाँ पहुँच गया था। वहाँ जिन सज्जन से मिलना था उन्होंने बतलाया कि अच्छा हुआ जो आप दस मिनट पहले ही आ गए वरना बाद में मैं आपको मिलता ही नहीं क्योंकि मैं किसी आवश्यक कार्य से अपने गाँव जा रहा हूँ और चार दिन बाद ही वापस आऊँगा। यह कहकर उन्होंने फटाफट मेरा काम कर दिया और चले गए।

उपरोक्त घटना विशेष तौर से बतलाती है कि बिल्ली का रास्ता काटा जाना किसी भी तरह से अशुभ या अनिष्टकारी नहीं होता। वह न शुभ होता है और न अशुभ ही। यह एक सामान्य घटना है जिसका किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैंने निर्णय किया कि भविष्य में कभी भी बिल्ली द्वारा रास्ता काटे जाने या अन्य किसी ऐसी अनर्गल घटना या बात पर ध्यान नहीं दूँगा। प्रश्न उठता है कि अंधविश्वास या ऐसी बेकार की बातें लोगों के मन में आती ही क्यों हैं?

संयोग से कभी बिल्ली के द्वारा रास्ता काटे जाने पर किसी का कोई काम पूरा नहीं हुआ या कोई दुर्घटना हो गई तो बिना सोचे–समझे इसका सारा दोष बिल्ली के माथे पर मढ़ दिया। यह वास्तविकता नहीं मात्र अंधविश्वास है। इसके पीछे कोई वैज्ञानिक सिद्धांत काम नहीं करता। कुछ लोगों ने अपने निहित स्वार्थ अर्थात भोले–भाले लोगों को ठगने के लिए इस तरह की घटनाओं के प्रभाव और उपाय का न केवल एक शास्त्र ही रच डाला अपितु इसे लोगों की धार्मिक आस्था तक से जोड़ दिया जिसका कोई वैज्ञानिक

आधार तो दूर कोई ठोस तर्क तक नहीं है। मात्र संयोग और वह भी प्राय: नहीं अपितु लाखों-करोड़ों पुनरावृत्तियों में एक-आध बार ही घटित होना किसी शास्त्र के निर्माण का आधार नहीं हो सकता।

लोगों का कहना है कि अगर बिल्ली रास्ता काट जाए तो वहीं रुक जाना चाहिए नहीं तो जिस काम के लिए जा रहे हैं वह कभी भी पूरा नहीं होगा। किसी वाहन से जा रहे हैं और बिल्ली रास्ता काट जाती है तो न रुकने पर दुर्घटना हो सकती है। कई बार दुर्घटना हो भी जाती है लेकिन बिल्ली के द्वारा रास्ता काटे जाने के कारण नहीं बल्कि अंधविश्वास से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता के कारण। अंधविश्वास या गलत विचार मानसिक रूप से हमें दुर्बल कर देते हैं अत: हम स्वयं पर नियंत्रण खो बैठते हैं और दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। अंधविश्वास एक मानसिक बाधा अथवा नकारात्मक स्थिति है। इससे बचने के लिए हमें अंधविश्वास के स्थान पर अपने अंदर वैज्ञानिक दृष्टिकोण व सकारात्मक विश्वास का विकास करना चाहिए।

– दिल्ली

कविता

मेलजोल जीवन

– डॉ. शेषपालसिंह 'शेष'

अकड़-धकड़कर चली हवा, बोली मैं ही जीवन हूँ।
इठलाकर बोला पानी, मैं औषधि 'संजीवन' हूँ।।
कहा ताप ने आँख चढ़ा, कण-कण देखाभाला है।
जीव-जंतु सब वृक्षों में, जीवन मैंने ढाला है।।
सुनकर वैज्ञानिक चौंका, बोला निर्णय मैं दूँगा।
लेकिन बिना प्रयोग किए, मैं बात नहीं मानूँगा।।
बीकर उसके एक लिया, पट्टिका साथ में ले ली।
हवा, ताप, जल तीनों ने, संकट की नौबत झेली।।
तीन बीज वैज्ञानिक ने, पट्टी पर बाँधे ऐसे।
ऊपर हवा मिले केवल, नीचे पानी ही जैसे।।
बीकर में रखकर पट्टी, उसमें जल इतना डाला।
मध्य बीज आधा डूबे, पाए जल-वायु सँभाला।।
बीकर फिर वैज्ञानिक ने, रख दिया धूप में जाकर।
पाँच सात दिन बाद उसे, परखा मस्तिष्क लगाकर।।
नहीं अंकुरित हो पाए, ऊपर नीचे के दाने।
मध्य बीज अंकुरित हुआ, दर्शक देखे पहचाने।।
नूतन जीवन विकसित है, यह मध्य बीज में आया।
हुआ प्रफुल्लित विज्ञानी, जन-जन का मन हर्षाया।।
बोला वैज्ञानिक सुनिए, तीनों ही अब तुम मन से।
मेलजोल में जीवन है, धरती से जुड़ें गगन से।।

ऊपर वाला बीज नहीं, जल रहित फूट ही पाया।
नीचे हवा-ताप वंचित, पानी में समय गँवाया।।
गरमी बिना बीज नीचे, आखिर कैसे उग पाता?
मिल भी जाती गरमी तो, वह हवा कहाँ से लाता?
गरमी, हवा और पानी, तीनों ने जिसको पाला।
अंकुर उसका ही फूटा, प्रकृति का खेल निराला।।
मिलकर जीत सदा होती, है हार अलग होने पर।
मेलजोल में जीवन हैं, कुछ नहीं थलग होने पर।।

– आगरा (उ. प्र.)

गूगल भैया

– डॉ. आरती स्मित

''नींबू लेऽऽऽ अदरक लेऽऽऽ आँवला लेऽऽऽ'' की आवाज सुनकर बच्चे जल्दी–जल्दी बाहर निकल आए।

पिछले नौ महीनों से ऐसा ही चल रहा था। गली के मुहाने से फेरी वाले की आवाज की गूँज भीतर तक पहुँचती और पूरे मोहल्ले के बच्चे–बड़े चेहरे पर मास्क चढ़ाए बाहर निकल आते और जरा दूरी बनाकर खड़े हो जाते। फेरी वाला बड़ों को दस रुपए के तीन नींबू देता, किन्तु बच्चों को चार। वह तीन नींबू देकर रुपए लेता, फिर एक और नींबू देते हुए कहता– ''यह मेरी ओर से तुम्हारे लिए है।'' बच्चे प्रसन्न होकर लौटते। दुबला–पतला किशोर फेरी वाला अपनी कोहनी पर झोला टाँगे प्रतिदिन की तरह आवाज लगाता आगे बढ़ जाता। पिछले कुछ दिनों से वह अदरक और आँवला भी लेकर आने लगा था।

राजू, चीनू, पिंकी, सुमि सब सोचा करते कि– ''वह फेरी वाले भैया पैदल घूम–घूमकर झोले में सामान क्यों बेचा करते हैं?''

''क्यों न एक दिन हम उनसे ही पूछें?'' पिंकी ने कहा।

''हाँ! कल उनसे ही पूछेंगे कि कोरोना के समय जब माँ मुझे या दादा–दादी को बाहर नहीं निकलने देती, बाबा भी कम निकलते हैं और बाहर से आकर गर्म पानी से नहाते हैं, ऐसे समय में वे क्यों जोखिम उठाते हैं? वे भी तो छोटे ही हैं... मुझसे थोड़े से बड़े... इतने से।'' मोनू ने उचक कर कहा।

''तुम भूल गए कि वह फेरी वाले भैया तो लॉक डाउन में भी आते थे नींबू बेचने, तब पिता जी खरीदते थे कभी–कभी।'' चीनू ने कहा।

''हाँ! उस समय तो किसी सब्जी वाले को गली में आने नहीं मिलता था या थोड़ी देर के लिए कभी–कभी। मगर ये नींबू वाले भैया तो प्रतिदिन ही आते रहे। कभी नागा नहीं किया।'' गोलू ने सबका ध्यान खींचा।

''भैया! आप काम क्यों करते हैं? आप पढ़ाई नहीं करते।''

''करता हूँ। बारहवीं में हूँ और मुझे काम करना अच्छा लगता है।'' फेरी वाले ने गोलू को मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

''लेकिन लॉक डाउन में जब कोई आता–जाता नहीं था, सब्जी वाले भी नहीं, आपने तभी नींबू बेचना शुरू किया! क्यों?... आपको कोरोना का भय नहीं लगता?'' पिंकी की गोल–गोल आँखों में भी प्रश्न था।

''इसलिए तो आता था ताकि तुम सभी को नींबू मिल सके। तुमने सुना नहीं, डॉक्टर ने कहा है कि नींबू में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पाई जाती है और कोरोना से लड़ने के लिए हमें 'विटामिन सी' लेना आवश्यक है। और सबसे अच्छी बात कि यह हमेशा मिल भी जाता है।

''हाँ! पिताजी माँ से कह रहे थे कि कोरोना से लड़ने के लिए विटामिन सी, विटामिन डी, विटामिन ई से भरपूर फल और सब्जियाँ खाना आवश्यक है, तभी हम ठीक रहेंगे।'' गोलू ने कुछ सोचते हुए कहा।

''अरे वाह! काकाजी को तो सब मालूम है।'' पिंकी की आँखें हैरानी से फैल गईं।

''वे अस्पताल में काम करते हैं न तो डॉक्टर काका की बात भी सुनते रहते हैं और मोबाईल पर कुछ पढ़ते भी रहते हैं।''

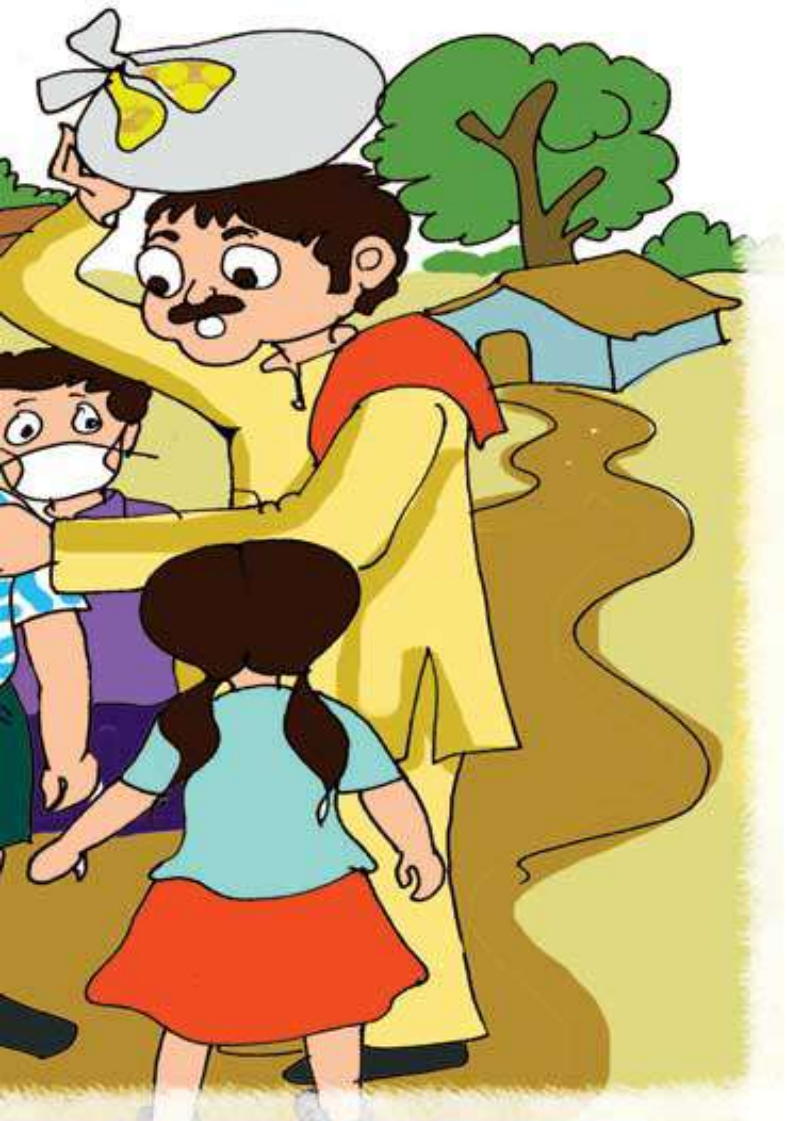

''लेकिन भैया! आप तो आवाज लगाते समय मास्क भी हटा देते हैं? क्या आपको सचमुच कभी डर नहीं लगता?'' जरा दूर खड़ी सुमि ने फेरी वाले को टोका।

''मास्क लगाकर चिल्लाने में दिक्कत होती है, इसलिए बीच-बीच में ही थोड़ा हटाता हूँ, हमेशा नहीं। और मैं प्रतिदिन हर गली में घूमते हुए जब घर लौटता हूँ तब तक दो घंटे सुबह की धूप में ही घूमता रहता हूँ तो मुझे भरपूर धूप मिल जाती है। जानते हो, धूप से हमें क्या मिलता है?''

''प्रकाश'' पिंकी चहकी।

''और?''

''विटामिन डी'' यह चीनू था।

''अरे वाह चीनू! तुम तो बड़े स्मार्ट हो!'' गोलू ने कहा तो सब हँस पड़े।

''दादा जी मेरे साथ प्रतिदिन छत पर जाते हैं और धूप में बैठते हैं। उन्होंने ही बताया था।'' चीनू झेंपकर बोला।

''लेकिन आप पढ़ाई छोड़कर काम क्यों करने लगे? कोई और नहीं है काम करने वाला?''

गोलू अब मुख्य प्रश्न पर आया तो फेरीवाला कुछ देर तक उसका चेहरा निहारता रहा। फिर मुस्कुराकर बोला- ''हम्म! पिता जी हैं। वे ठेले पर सब्जी बेचते हैं। अभी विद्यालय बंद हैं तो मैं भी थोड़ी सहायता कर देता हूँ।''

''किन्तु आप तो झोला लेकर आते हो?''

''हाँ, लॉक डाउन के समय सबका निकलना बंद था, सब्जी बेचने के लिए भी, तब मैंने यह उपाय निकाला।''

''यदि आप बीमार हो गए तो?''

''मैं घर जाकर गर्म पानी और हल्दी से कुल्ला कर लेता है, फिर माँ गुनगुने पानी में नींबू डालकर देती है और जानते हो मैं नींबू के छिलके नहाने के गर्म पानी

में डाल देता हूँ, शरीर की भी अच्छी सफाई हो जाती है।''

''मेरी माँ भी पिता जी को गर्म पानी में नींबू का रस डालकर देती है। और नींबू के छिलके को फ्रिज में रख देती है।''

''???''

''माँ बाद में नींबू के छिलकों को जमा करके उसका अचार बना देती है। खट्टा-मीठा सा। माँ कहती हैं, छिलकों में रस से भी अधिक विटामिन-सी पाया जाता है।''

''सुमि! तुमने पहले कभी बताया नहीं?''

''तुम लोगों ने आपस में कभी इस तरह बात ही नहीं की होगी। क्यों सुमि! सही कहा न मैंने?''

''हाँ भैया! आज भी हम आपसे बात न करते तो हमें पता ही नहीं चलता।'' गोलू सिर खुजाता हुआ बोला।

बच्चों को फेरीवाले भैया अब फेरीवाले कम, गूगल बाबा अधिक लग रहे थे। उन्हें बात करके मजा आ रहा था।

''आप पढ़ाई भी करते हो, काम भी। थक नहीं जाते?''

''नहीं! मुझे काम करना अच्छा लगता है और जब पढ़ाई करते हुए काम कर सकता हूँ, तब घर में क्यों बेकार बैठूँ?''

''हम्म! मगर, अब तो ठंड आ गई। आपको सुबह जगने में आलस्य नहीं आता? मैं तो अक्सर आपकी आवाज से जगती हूँ।'' सुमि ने सिर हिलाते हुए कहा।

''मेरी माँ सुबह-सुबह तुलसी, अदरक और लौंग वाली चाय देती है। तुम लोग अदरक, तुलसी और लौंग खाते हो?''

''मुझे अदरक बिलकुल अच्छा नहीं लगता, किन्तु माँ सब्जी में डाल देती है। तुलसी भी कड़वी लगती है और लौंग तीखा।'' कहते हुए राजू ने मुँह बिचकाया।

''मैं तो प्रतिदिन खाना खाने के पहले कच्चे अदरक का छोटा-सा टुकड़ा नमक लगाकर खाता हूँ। जानते हो, इसमें विटामिन ए, डी, ई एक साथ मिल जाते हैं, साथ ही कैल्शियम और मैग्नेशियम भी। यह हमारी भूख बढ़ाता है, सर्दी-खाँसी से बचाता है, जोड़ों और सिर के नसों में दर्द से भी आराम देता है। और भी कई लाभ हैं इसके। मेरी माँ तो ठंड शुरू होते ही अदरक खिलाना शुरू कर देती है, तभी तो फिट रहता हूँ। तुम आज इसे गुड़ की डली के साथ खाकर देखना, कितना अच्छा लगता है।''

''देखूँगा!'' राजू ने बेमन से कहा- ''मगर आप इतना कुछ कैसे जानते हो?''

''क्योंकि मैं गूगल पर कुछ-कुछ पढ़ता रहता हूँ।''

''आपके पास फोन भी है?'' छोटे राजू की आँखें फैल गईं।

''अभी ऑनलाईन कक्षा चल रही है, इसलिए पिताजी का फोन शाम को मेरे पास ही रहता है।'' फेरीवाला हँसता हुआ बोला।

''भैया! भैया! आप आँवला कहाँ से लाते हो?'' गोलू अचानक पूछ बैठा।

''पिता जी मंडी से लाते हैं।''

''मंडी मतलब?''

''जहाँ ढेर सारे फल और सब्जी बिकते हैं।''

''ओऽऽ!''

''मैं आँवला बेचता भी हूँ और खाता भी हूँ।'' वह हँसा।

''जाड़े में मैं कच्चा आँवला भी खाता हूँ।''

''मगर कच्चा आँवला तो खारा-सा होता है।'' पिंकी ने मुँह बिचकाया।

''खारा नहीं कसैला।''

''हाँ-हाँ, वही। मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता।'' अब उसने अपनी नुकीली नाक सिकोड़ी।

''तो इसका मुरब्बा खाओ। वह तो बड़ी अच्छी लगती है। रस भरे रसगुल्ले–सी।''

''सही कहा! मेरी दादी बहुत टेस्टी मुरब्बा बनाती हैं।'' सुमि ने फेरीवाले की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

''मेरी माँ तो इसका अचार भी बना कर रख देती है।'' राजू ने बताया।

''मैं जब छोटा था तब माँ मेरे लिए इसका मुरब्बा बना दिया करती थी। जब मैंने पढ़ा कि आँवले में विटामिन सी सबसे अधिक होता है तो कच्चा भी खाने लगा। आँवला प्रतिदिन खाने से आँख की रोशनी बढ़ती है, खून साफ रहता है तो घाव नहीं होते।'' फेरी वाले ने बात पूरी की।

''भैया! आपको तो डॉक्टर या शिक्षक बनना चाहिए।'' अब तक चुप चीनू बोल पड़ा।

''मैं खाली समय में पेड़–पौधों, फल–सब्जियों के लाभ को गूगल पर पढ़ता रहता हूँ। इसलिए इतनी बातें मालूम हैं।'' कहते हुए भैया ने नींबू के साथ ही एक–एक आँवला और अदरक का टुकड़ा पकड़ा दिया।

''आपसे बात करके आनन्द आ गया। आज से हम आपको गूगल भैया बुलाएँगे।'' सुमि ने पलकें झपका कर कहा तो सब हँस पड़े।

– दिल्ली

छोटी कहानी

उत्सव की तैयारी

– डॉ. विमला भण्डारी

आज रात बलवीर की बुआ रानीखेत एक्सप्रेस से आ रही है। फूफा जी ने फोन पर यह सूचना दी तो सभी के चेहरे खुशी से खिल गए।

कल बलबीर का जन्मदिन है। बुआ आ रही है तो इस बार अच्छी पार्टी हो जानी चाहिए। माँ ने बच्चों से पूछा, ''इस बार पार्टी होटल चाँदनी महल में रख दी जाए तो कैसा रहेगा?''

सुनकर बलबीर तो उछल पड़ा पर बड़े भैया सूरज ने कहा– ''इतना खर्च करने की क्या आवश्यकता है? हम घर पर भी तो अच्छा उत्सव मना सकते हैं।''

इस पर दादी जी बोलीं, ''हजारी काका काजू कतली ही नहीं गुलाब हलवा भी बहुत अच्छा बनाते हैं। क्यों न मिठाई बनाने के लिए उन्हें बुला लिया जाए। संगीत की व्यवस्था तो तुम कुमुदिनी के जिम्मे छोड़ सकती हो बहू! वह तबला बजा लेगी और उनके पति कमल किशोर जी गाना भी गा लेंगे।''

बात बिगड़ती देखकर माँ ने बीच में ही बात लपक ली। ''.. .किन्तु केक की व्यवस्था कैसे होगी?''

बड़े भैया सूरज कुछ कहते इससे पहले ही नाहर मुखी छड़ी लेकर दादा जी उठ खड़े हुए। वह बोले– ''इस समस्या का हल भी कर देंगे बहुरानी। इस बार गुड़ का हलवा जमवाकर केक की तरह कटवा लेंगे।'' ''जब सब कुछ तय हो गया तो उपहार लाने के लिए कल तक की प्रतीक्षा क्यों करें?'' रजनी बोली तो सुगंधा पर्स लेकर तैयार हो गई। दोनों ही उपहार खरीदने मोगरा बाड़ी बाजार की ओर चल पड़ीं।

– सलम्बूर (राज.)

खोजिए, इस कहानी में हैं दस से अधिक फूलों के नाम। न खोज सकें तो उत्तर इसी अंक में कहीं।

पराग के सम्पादक और मौलिक बालसाहित्य के लेखक

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

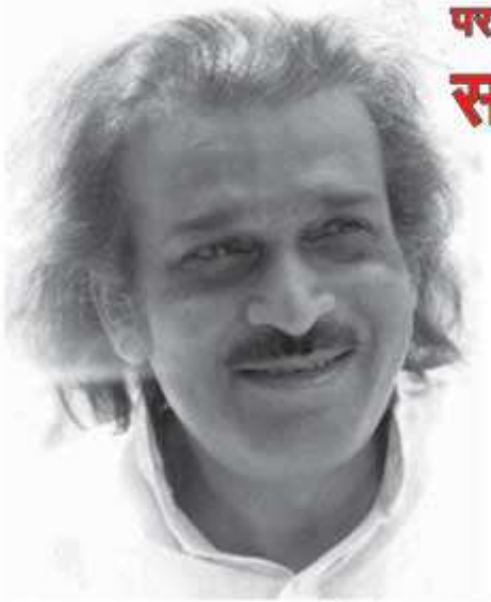

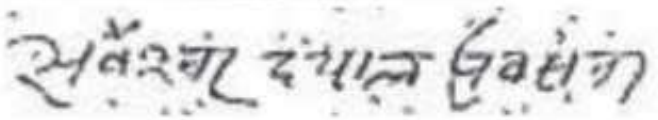

– प्रस्तोता– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

तीसरा सप्तक के सुप्रसिद्ध कवि और दिनमान के संपादक रहे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी (१५ सितंबर १९२७ –२३ सितम्बर १९८३) ने बड़ों के साथ–साथ आप बच्चों के लिए भी उसी मनोयोग और समर्पण भाव से उत्तम साहित्य की रचना की। उन्होंने बतूता का जूता जैसी ढेरों कालजयी बाल कविताएँ तो लिखीं ही, उनकी बाल कहानियाँ और नाटक भी अनूठे हैं। जीवन के अंतिम दिनों में वे लोकप्रिय बाल पत्रिका पराग के संपादक थे। उन्होंने पराग पत्रिका को अपनी नई सोच और दृष्टि के बल पर शिखर तक पहुँचाया। पराग को बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका बनाने के लिए उनका योगदान अतुलनीय है।

सर्वेश्वर जी का जन्म बस्ती जनपद में विश्वेश्वर दयाल और सौभाग्यवती देवी के पुत्र रूप में हुआ था। उनकी शिक्षा बस्ती, प्रयाग और काशी में संपन्न हुई। उनका प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय था। पढ़ाई के साथ–साथ नौकरी भी की। जीविका के लिए पहले उन्होंने शिक्षण का क्षेत्र चुना था किन्तु बाद में ऑल इंडिया रेडियो और फिर पत्रकारिता जगत को सदा के लिए अपना लिया। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों पर जमकर प्रहार किया नई कविता के वे सशक्त हस्ताक्षर थे अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरा सप्तक के महत्वपूर्ण कवियों में उनकी चर्चा होती है। उन्हें साहित्य अकादमी द्वारा 'खूंटियों पर टंगे लोग' पुस्तक के लिए पुरस्कृत भी किया गया।

सर्वेश्वर जी की बाल साहित्य की प्रमुख पुस्तकें हैं– बबूता का जूता, महंगू की टाई, बिल्ली के बच्चे, नन्हा ध्रुव तारा, भौं भौं खों खों, लाख की नाक, अपना दाना, बुद्ध की करुणा, इत्यादि। 'सफेद गुड़' उनकी चर्चित बाल कहानी है जो बच्चों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास से युक्त जीवन शैली जीने की प्रेरणा देती है।

सर्वेश्वर जी बाल साहित्य में मौलिकता और नवीनता के पक्षधर थे। उन्होंने साक्षरता निकेतन द्वारा नवंबर १९७९ में लखनऊ में आयोजित बाल साहित्य संगोष्ठी में कहा था कि बाल साहित्य का सृजन बच्चों से जुड़कर ही संभव है। बाल लेखक को तीज–त्यौहार, होली–दिवाली पर ढेरों बेकार रचनाएँ लिखने के स्थान पर अनुकूल लेखन करना चाहिए। ऐसे लेखकों की ओर आवश्यक है जो युगभाव लेकर बच्चों से सीधा संबंध बनाए उनके साथ खेलें। उन्हें कविताएँ सुनाएँ, कहानियाँ सुनाएँ और अपनी उन रचनाओं का परीक्षण करें जिन्हें वह अपने घर बैठे श्रेष्ठ मानते हैं, ऐसा नाटक लिखें जिसे बच्चे खेल सकें। जिसमें गाना–नाचना, उछलकूद भी हो और जो इतना लचीला भी हो कि बच्चा स्वयं उसमें जो चाहे जोड़–घटा सकें।

आइए, यहाँ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी की कुछ अनूठी बाल कविताओं का रसास्वादन करें–

चोट

पत्थर खाकर शीशा टूटा,
गिरा हो गया चकनाचूर।
पत्थर खा पिल्ला पिपिआया,
भागा पूँछ दबाकर दूर।।
लेकिन पत्थर खाकर लोहा,
जहाँ खड़ा था खड़ा रहा।
पानी पत्थर-खाकर उछला,
मगर ताल में अड़ा रहा।।
दुनिया की हर एक चीज से,
अलग चोट का नाता है।
समझदार इन्सान चोट खा,
और बड़ा हो जाता है।।
जो चोटों से डरता है,
रोता है या घबराता है।
पिचके हुए कनस्तर सा,
कूड़े में फेंका जाता है।।
यह इतिहास बड़ा निर्मम है,
उसको ही अपनाता है।
चोली-दामन-सा रखता जो,
सदा चोट से नाता है।।

जड़ की बात

पेड़ों को जूते सिलवा दो, पर क्या वे चल पाएँगे ?
नेकर-शर्ट सिला दो पर क्या, पी. टी. करने जाएँगे ?
चिड़ियों ने इतना सिखलाया,
लेकिन पेड़ न उड़ पाए।
रात चाँद ने बहुत बुलाया,
क्या तारों से जुड़ पाए ?

बस अपनी किताब खोलें,
वे जहाँ खड़े थे खड़े रहे!
आँधी आई, मौसम बदले,
जहाँ अड़े थे अड़े रहे।
जब तक हवा-धूप-पानी था,
फूल-फल दिया हरे रहे।
जब इन सबसे नाता टूटा
छाया से भी परे रहे।
इतना अड़ियल जीवन जीकर
पेड़ हमें क्यों भाते हैं ?
क्यों धरती की शोभा,
धरती का जीवन कहलाते हैं ?
क्या अपनी जड़ पा लेने से, बड़ी और कुछ बात नहीं ?
पेड़ों ने इतना ही सीखा, उन्हें और कुछ ज्ञात नहीं।

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता, निकल पड़े तूफान में।
थोड़ी हवा नाक में घुस गई, घुस गई थोड़ी कान में।।
कभी नाक को कभी कान को, मलते इब्न बतूता।
इसी बीच में निकल पड़ा, उनके पैरों का जूता।।
उड़ते-उड़ते जूता उनका, जा पहुँचा जापान में।
इब्न बतूता खड़े रह गए, मोची की दूकान में।।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

संस्मरण

गले में घण्टी

– टीकम चन्दर ढोडरिया

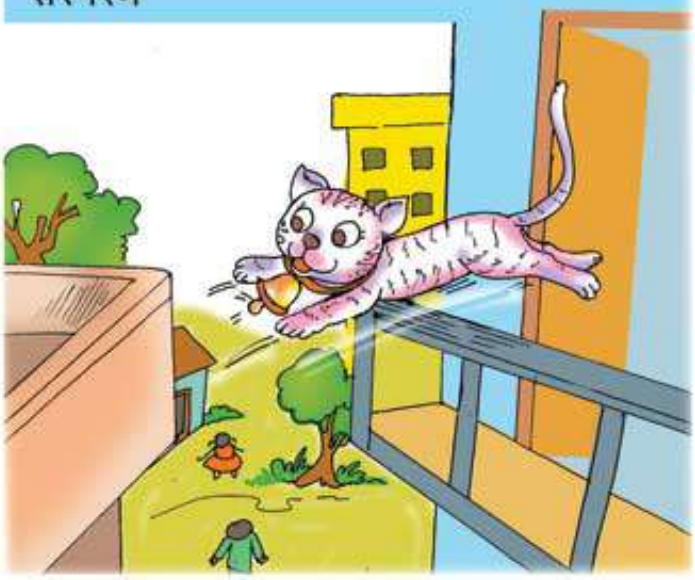

प्यारे बच्चो! हमारा घर एक छोटे से कस्बे में स्थित है। घर दो मंजिला है। नीचे का भाग हमनें किराए पर दे रखा है। ऊपर वाले भाग में दो कमरे बने हुए हैं और उनके आगे खाली छत है। ऊपर वाले भाग में हम रहते हैं। घर से कुछ ही दूरी पर एक छोटी–सी सुन्दर पहाड़ी है। जिस पर जानवर घास चरते रहते हैं।

पिछली गर्मी की बात है बच्चों की परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। विद्यालयों की छुट्टियाँ भी लग चुकी थी। हमारे घर में नीचे रहने वाले किरायेदार छुट्टियाँ मनाने अपने गाँव जा चुके थे।

एक रात को आँधी आने के कारण बिजली चले जाने से अँधेरा हो चुका था। तेज हवाएँ चल रही थी। रात्रि के लगभग एक बजे का समय होगा। हमारे घर के नीचे की भाग में धीरे–धीरे घण्टी बजने की आवाज सुनाई दी। आवाज कभी तेज हो जाती, कभी कम हो जाती और कभी रुक जाती। पहले तो मैंने मेरा भ्रम मानकर विशेष ध्यान नहीं दिया। परन्तु बार–बार घण्टी की आवाज सुन मैं उठ बैठा। मन में विचार आया कि रात्रि को सोने से पहले अन्दर बकरी अथवा उसका बच्चा आ गया होगा यह शायद उसी के गले में बँधी घण्टी की आवाज हो। मैं दरवाजा खोलकर नीचे देखने जाता उसके पहले ही ऊपर आने वाली सीढ़ियों पर घण्टी की आवाज आने लगी। मैंने दरवाजा खोलकर सीढ़ियों पर देखा तो वहाँ कुछ दिखाई नहीं दिया। मैं पुन: कमरे में आ गया। कुछ समय पश्चात छत पर फिर घण्टी की आवाज आई। इस बार मैं टॉर्च लेकर छत पर आया तो बकरी अथवा उसके बच्चे जैसा कुछ नजर नहीं आया। फिर छत के कोने में टॉर्च की रोशनी डाली तो एक बिल्ली दुबकी हुई बैठी दिखाई दी। मेरे भगाने पर वह उछलती हुई पास के मकान पर छलाँग लगाकर भाग गई। भागते समय उसके साथ ही घण्टी की आवाज सुनाई दी तो मेरा सारा भ्रम पल भर में दूर हो गया।

सवेरे उठकर मैंने यह सारी घटना मेरे नटखट पोते निक्की को सुनाई तो वह बोला अरे! बाबा यह बिल्ली आए दिन अपने रसोई घर में घुसकर दूध पी जाती थी और काफी नुकसान कर जाती थी, इस कारण मैंने और मेरे मित्रों ने एक लम्बी रस्सी में घण्टी बाँधकर चुपके से इसके गले में डाल दी थी ताकि हमें इसके आने का पता चल जाए।

इस पर मैंने उसे समझाया बेटा तुमने यह अच्छा नहीं किया। हमें रसोई घर का दरवाजा बंद रखना चाहिए। उसके गले में बँधी घण्टी के कारण तो वह अपना शिकार भी नहीं कर पाएगी। घण्टी की आवाज से उसका शिकार भी भाग जाएगा और ऐसे तो वह एक दिन भूख से मर जाएगी।

मेरी बात सुनकर उसे काफी पश्चाताप हुआ। उसने कहाँ बाबा अब मैं भविष्य में ऐसा कभी नहीं करूँगा।

एक दिन संध्या को जब मैं घर आया तो निक्की मुस्कुराता हुआ मेरे पास आया और घण्टी दिखाता हुआ बोला बाबा यह वही बिल्ली वाली घण्टी है। सुबह मुझे नीचे पड़ी हुई मिली। उसकी आँखों में प्रसन्नता छलक रही थी।

– छबड़ा (राजस्थान)

अनूठी वजह

चित्रकथा: देवांशु वत्स

नईनवेली से उलझी स्मार्टकार

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

स्मार्टकार ने नईनवेली कार को देखा। उस नईनवेली के बारे में जानने की इच्छा हुई। उसने अपने स्मार्ट सिस्टम से उसको जाँचा परखा, तब कहा– ''तुम देखने में अच्छी हो, किन्तु क्या तुम इसी प्रकार से चलने में भी अच्छी हो?''

किन्तु, नईनवेली कुछ नहीं बोली। वह समझ गई कि स्मार्टकार को अपनी स्मार्टनेस पर घमंड हो गया है। वह उसी घमंड में बोल रही है। इसलिए वह चुप रही। किन्तु, स्मार्टकार कब चुप रहने वाली थी। पुन: बोली– ''अरे! मैं तुमसे ही बोल रही हूँ। क्या तुम्हें बोलना भी आता है या नहीं?''

मगर, वह चुप रही। तब स्मार्टकार ने कहा– ''अरे! लजाना छोड़ो। मुँह से कुछ बोलो।''

किन्तु, वह चुपचाप मुस्कुराती रही।

''लगता है कि तुम्हें केवल मुस्कुराना ही आता है। कुछ बोलना और चलना आता ही नहीं है। या फिर तुम दिखने में ही नईनवेली हो और तुम्हारे अंदर कोई विशेषता नहीं है।''

यह सुनकर नईनवेली चुप नहीं रह सकी। उसे हमेशा ही स्मार्टकार के साथ रहना था। इस कारण उसने कहा– ''मैं बोलना भी जानती हूँ। तेजी से चलना भी। किन्तु!'' कहकर चुप हो गई।

''अरे बोलो–बोलो, किन्तु क्या?''

''मैं तुम्हारी जैसी घमंडी नहीं हूँ।'' नईनवेली के मुँह से अचानक यह निकल गया।

''ओह! तुम्हें भी बोलना आता है। तभी इतना बोल रही हो।'' यह कहते हुए स्मार्टकार ने नईनवेली कार को पुन: जांचा–परखा। वह बैटरी की इलेक्ट्रिक से चलने वाली कार थी। उसकी बैटरी में चार्जिंग कम था। वह अधिक दूर चल नहीं सकती थी। यह जानकर उसने नईनवेली कार से कहा– ''मैं कैसी मान सकती हूँ। तुम चलना भी जानती हो?''

स्मार्टकार की यह बात सुनकर नईनवेली समझ गई। स्मार्टकार उससे दौड़ लगाना चाहती है। ताकि देख सकें कि कौन सी कार अधिक गति से चलती है। यह सुनकर नईनवेली बोली– ''तो फिर दौड़ हो जाए?''

स्मार्टकार यही चाहती थी।

''क्यों नहीं!'' स्मार्टकार ने कहा– ''मेरी एक शर्त है।''

''मुझे स्वीकार है।'' नईनवेली कार बोली।

''हम २५० किलोमीटर चलकर वापस आएँगे।'' यह कहकर वह मुस्कुराई उसे पता था कि नईनवेली कार के पास इतनी बैटरी चार्ज नहीं है। वह २५० किलोमीटर तक जाकर पुन: वापस नहीं लौट सकती है। जबकि इस घमंड में उसने अपने अंदर भरे हुए पेट्रोल का ध्यान ही नहीं रखा। उसमें अधिक ईंधन नहीं था।

बड़े–बुजुर्ग कहते हैं कि घमंड में आदमी अंधा हो जाता है। उसे अपना ध्यान नहीं रहता है। वह केवल दूसरों के बारे में सोचता है। उसे अपने बारे में कुछ पता

नहीं चलता है। उसकी क्षमता क्या है? वह क्या कर सकता है? यही बात स्मार्टकार के बारे में लागू हुई। उसने अपने बारे में कुछ नहीं सोचा था।

बस! उसे तो दौड़ लगाना थी। यही धुन उसके मन में बैठी हुई थी।

नईनवेली ने कहा– ''चलो! चलते हैं।''

''हाँ हाँ चलो।'' कहते ही दोनों कार दौड़ते हुए सड़क पर आ गई।

पेट्रोल कार यानी स्मार्टकार तेजी से दौड़ रही थी। उसे देखकर नईनवेली ने अपनी गति बढ़ाई, स्मार्टकार ने अपने सैंसर से नईनवेली को देखा, नईनवेली पीछे आ रही थी। वह उसे देखकर मुस्कुराई, ''क्या यही तुम्हारी गति है?''

''नहीं, दौड़ते चलो।'' नईनवेली बोली– ''मैं अपनी गति धीरे–धीरे बढ़ाती हूँ।'' कहते हुए नईनवेली ने अपनी गति बढ़ाई। वह धीरे–धीरे स्मार्ट कार के पास आती जा रही थी। यह देखकर स्मार्ट कार घबराई। ऐसा न हो कि नईनवेली उसे पीछे छोड़ दे, इसलिए उसने भी अपनी गति और तेज की।

नईनवेली कब पीछ रहने वाली थी। उसने अपनी गति और बढ़ाई, वह अब स्मार्टकार के बराबर दौड़ रही थी।

''चलो भाई, अपनी गति बढ़ाओ।'' नईनवेली बोली।

''पहले तुम अपनी गति बढ़ा लो।'' कहते हुए स्मार्टकार तेजी से आगे बढ़ गई।

नईनवेली कार बैटरी की बिजली से चलती थी। उसकी यह गति अधिकतम हो चुकी थी। उससे अधिक गति से चल नहीं सकती थी। इसलिए वह धीरे–धीरे पीछे होती चली गई। तब तक निर्धारित २५० किलोमीटर तक पहुँचकर स्मार्टकार पलट कार वापस मुड़कर आ गई थी।

''क्यों नईनवेली! पीछे रह गई।'' कहते हुए वह तेजी से दूसरी ओर जाने लगी।

नईनवेली ने भी अपनी गति बढ़ाई। निर्धारित स्थान पर लाकर वापस मुड़ी। फिर तेजी से वापस दौड़ने लगी। तब तक स्मार्टकार बहुत आगे निकल गई थी।

नईनवेली ने भी अपनी गति बढ़ाई। वह तेजी से दौड़ने लगी। ताकि वह स्मार्टकार को पकड़ सकें। अभी वह कुछ दूर चल रही थी। तभी स्मार्टकार अचानक रास्ते पर रुक गई, वह तेजी से उसके पास आ गई।

''अरे! तुम्हें क्या हो गया?'' उसे देखकर नईनवेली कार भी रुक गई।

स्मार्टकार का मुँह उतरा हुआ था। वह दुखी लग रही थी। उसने नईनवेली की ओर देखकर कहा– ''बहन! तुम जीत गई, मैं हार गई।''

उसकी यह बात नईनवेली को समझ में नहीं आई, वह बोली– ''बहन! कैसी बात करती हो। अभी तो रेस समाप्त नहीं हुई है, हमें १५० किलोमीटर और जाना है, इसके पहले रेस का निर्णय कैसे हो सकता

है।''

तब निराश होकर स्मार्टकार ने कहा– ''मैं घमंड में चूर थी। मैंने अपने आपको जाना परखा नहीं था। मेरे अंदर पेट्रोल यानी ईंधन कम था। उसे देखे बिना मैंने रेस लगा ली। इस कारण मैं यहाँ रुक गई। मेरे अंदर का ईंधन समाप्त हो गया। अब मैं दौड़ क्या चल भी नहीं सकती हूँ। इसलिए कह रही हूँ। कि तुम जीत गई। मैं हार गई।''

इस पर नईनवेली कार ने कहा– ''अरे बहन! इस में दुखी होने की कौनसी बात है। तुम पेट्रोल वाली कार हो। ईंधन से चलती हो। तुममें अपनी अलग विशेषता है। मुझमें अलग विशेषता है। हम अपनी–अपनी विशेषता के कारण विशेष हैं।'' कहते हुए नईनवेली ने स्मार्टकार को समझाया।

तब स्मार्टकार को समझ में आया कि अपनी विशेषता पर हमें घमंड नहीं करना चाहिए। तब वह मुस्कुराकर बोली– ''अब हम घर कैसे जाएंगे?''

यह सुनकर नईनवेली मुस्कुराई– ''बिलकुल सरल है।''

''वह कैसे?''

''मैं अभी तुम्हें अपने से बाँध लेती हूँ।'' कहते हुए नईनवेली ने अपनी डिक्की से रस्सी निकाली। स्मार्टकार को अपने पीछे बाँध लिया। फिर बोली– ''इस प्रकार हम घर चले जाएँगे।'' कहते हुए नईनवेली मुस्कुरा उठी।

उसको मुस्कुराता हुआ देखकर स्मार्टकार ने पूछा– ''एक बात बताओ। मुझे पता था कि तुम्हारी बैटरी कम चार्ज थी। वह १०० किलोमीटर से अधिक नहीं चल सकती थी। फिर तुम ३०० किलोमीटर से अधिक कैसे चल गई हो? यह बात मेरी समझ में नहीं आई।''

''ओह!'' नईनवेली ने याद करते हुए कहा– ''इसीलिए तुमने मुझसे रेस लगाई थी। तुम यह जानती थी कि मैं अधिक नहीं चल सकती हूँ।''

''हाँ।''

''किन्तु, शायद तुम्हें यह पता नहीं है कि हम जिस सड़क पर रेस लगा रहे हैं, वह भारत की सबसे स्मार्ट सड़क यानी आधुनिक सड़क है, यह सड़क मेरे लिए उपयुक्त है।'' नईनवेली ने कहा तो स्मार्टकार ने फिर पूछा– ''मैं समझी नहीं। तुम क्या कहना चाहती हो?''

''यही कि यह सड़क इलेक्ट्रिक सड़क है। यानि इस सड़क के नीचे इलेक्ट्रिक सर्किट लगा हुआ है। जब मैं दौड़ती हूँ तो इससे अपनी बैटरी चार्ज करती रहती हूँ। इसलिए मुझे चार्जिंग के लिए कहीं रुकना नहीं पड़ता है। दौड़ते हुए मेरी बैटरी चार्ज हो जाती है।''

यह सुनते ही स्मार्टकार मुस्कुराई। ''तभी तुम आसानी से दौड़ पा रही थी।''

''हाँ,'' कहते हुए नईनवेली कार चल दी। उसने अपनी गति बढ़ा ली थी।

कुछ ही देर में वे वापस घर आ गए। यहाँ आकर स्मार्टकार ने राहत की साँस ली। वह समझ गई थी कि किसी को अपनी विशेषता पर घमंड नहीं करना चाहिए, हो सकता है कि कोई चीज उससे अधिक ओर दूसरी विशेषता के साथ आ सकती है। यह याद आते ही स्मार्टकार बोली– ''धन्यवाद बहन! आज तुमने मेरी सहायता की।''

यह सुनकर नईनवेली मुस्कुराकर बोली– ''अरे बहिन! मित्रता में सहायता की जाती है। धन्यवाद नहीं दिया जाता है।''

''ठीक कहती हूँ।'' स्मार्टकार बोली आज से हम पक्के मित्र हैं।''

''हूँ'' कहकर नईनवेली मुस्कुरा दी।

तभी कार का मालिक बाहर आता हुआ दिखाई दिया। उसे देखकर दोनों के बीच की वार्ता बंद हो गई।

– रतनगढ़, नीमच (म. प्र.)

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- संकेत

दो आंखें एक आंख के मुकाबले बेहतरीन देखने में मदद करती हैं.
यही तुम जानते हो...पर ऐसा हमेशा नहीं होता.
कई बार दोनों आंखों से आ रही तस्वीरें मिलकर वास्तविकता
की कुछ और ही गड्ड मड्ड सी तस्वीर दिखा देती है.
दिमाग आदतन आंखों से मिली हर तस्वीर को
बेहतर दिखाने के लिए सम्पादित करता है और
तस्वीर से उत्पन्न भ्रम को अनदेखा कर देता है.

आजमाना चाहोगे कैसे?
एक मोटी शीट या मोटा कागज रोल करो...
और अपनी दायीं आंख पर
उसे दूरबीन की तरह लगाओ....

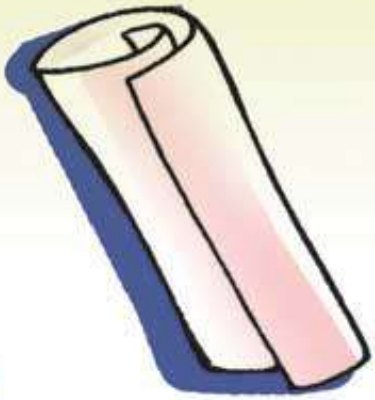

अब दूसरे हाथ को आंखों से
करीब 4 इंच दूरी पर रखो...

अगर तुम्हारे हाथ और
आंख की स्थिति सही
अनुपात में है तो तुम्हें अपने
हाथ में छेद दिखाने लगेगा.

पलक झपकते ही

– रजनीकांत शुक्ल

संध्या का समय था। अँधेरा धीरे-धीरे वातावरण पर अपना प्रभाव जमाता जा रहा था। वह २००२ का वर्ष था और फरवरी महीने की पहली तारीख थी।

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में भी उस समय संध्या गहराने लगी थी। जामा मस्जिद के पास की उस गली में भी धीरे-धीरे सन्नाटा छाने लगा था। दिन वाली वह निश्चिन्तता अब नहीं दिखाई दे रही थी।

इसी गली में रुक्कैया बेगम का घर था। वह चौदह वर्ष की थी। कुछ शर्मीला सा मुस्कुराता चेहरा था उसका। अभी वह घर के दरवाजे पर खड़ी थी। घर में रात के खाने की तैयारियाँ चल रहीं थीं। उसका वहाँ कोई काम नहीं था इसलिए वह कुछ देर मन बहलाव के लिए घर के बाहर खड़े होकर गली का निरीक्षण करने लगी थी।

अपने-अपने कामों से फुरसत पाकर लोग जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए घरों की ओर चले जा रहे थे। उस गली में अधिक लोग नहीं थे। उसके दरवाजे की गली बहुत अधिक चौड़ी न होकर सँकरी थी। छोटे वाहन तो निकल जाते किन्तु दो वाहनों का एक साथ निकलना बहुत कठिन होता।

अभी-अभी उसके पड़ोस में रहने वाला शरीर साईकिल से उसके सामने से निकल गया था। कुछ ठेली वाले कुछ ऑफिस, कार्यालय में काम करने वाले अपना बैग थामे उसके सामने से निकल गए।

वह बैठे-बैठे सामने सड़क पर यही सब कुछ देख रही थी। अभी कुछ देर बाद उसको खाने के लिए पुकारा जाएगा तब वह घर के अन्दर जाएगी। खाकर सो जाएगी। वह यही सब सोच रही थी कि तभी उसे भट भट भट भट का तेज शोर करती हुई आवाज सुनाई दी। वह उठकर बाहर की ओर आ गई। उसने देखा कि मलबे से भरी हुई ट्राली लिए हुए एक ट्रैक्टर सामने गली में से चला आ रहा है।

शायद किसी का मकान गिरा होगा। जिसका मलबा भरकर फेंकने के लिए यह ट्रैक्टर ट्राली को लेकर जा रहा था। रुक्कैया बेगम को ट्रैक्टर चलाने वालों से हमेशा यह शिकायत रहती थी कि वे जब गली में भीड़ वाले स्थान में होते तो ट्रैक्टर की स्पीड बढ़ा देते हैं। एक तो वैसे भी ट्रैक्टर की आवाज कर्णकटु लगती है और उस पर ड्राईवर का एक्सरलेटर पर पैर रखकर गति को बढ़ा देना।

अभी रुक्कैया ऐसा सोच रही थी तभी ट्रैक्टर के ड्राईवर ने गति को बढ़ा दिया। ट्रैक्टर की आवाज ऐसी अजीब थी कि वह बैठी न रह सकी और उठकर बाहर आ गई।

उसकी दृष्टि उस समय आने वाले उस ट्रैक्टर और मलबे वाली ट्राली की ओर थी। वह क्षण प्रतिक्षण उसके निकट आता जा रहा था। तभी उसे अपने पीछे घंटी की आवाज सुनाई दी। यह तो साइकिल की घंटी थी। जो शरीफ ने बजाई थी। वह अपना काम करके वापस लौट रहा था।

उधर से ट्रैक्टर और इधर से साइकिल आमने सामने रुक्कैया के ठीक सामने आकर मिलने वाले थे। सँकरी सड़क होने के कारण वहाँ पर इतनी जगह नहीं थी कि दोनों आराम से निकल सकें।

वह संयोग ही था कि रुक्कैया की दृष्टि इन दोनों वाहनों पर थी। 'तुम्हें अपनी साइकिल रोक कर इस ट्रैक्टर ट्राली को निकल जाने देना चाहिए।'' रुक्कैया ने सोचा कि वह जोर से चिल्लाकर ऐसा शरीफ से कहे। पर तब तक शरीर अपनी साईकिल के साथ ट्रैक्टर के बराबर में आ चुका था।

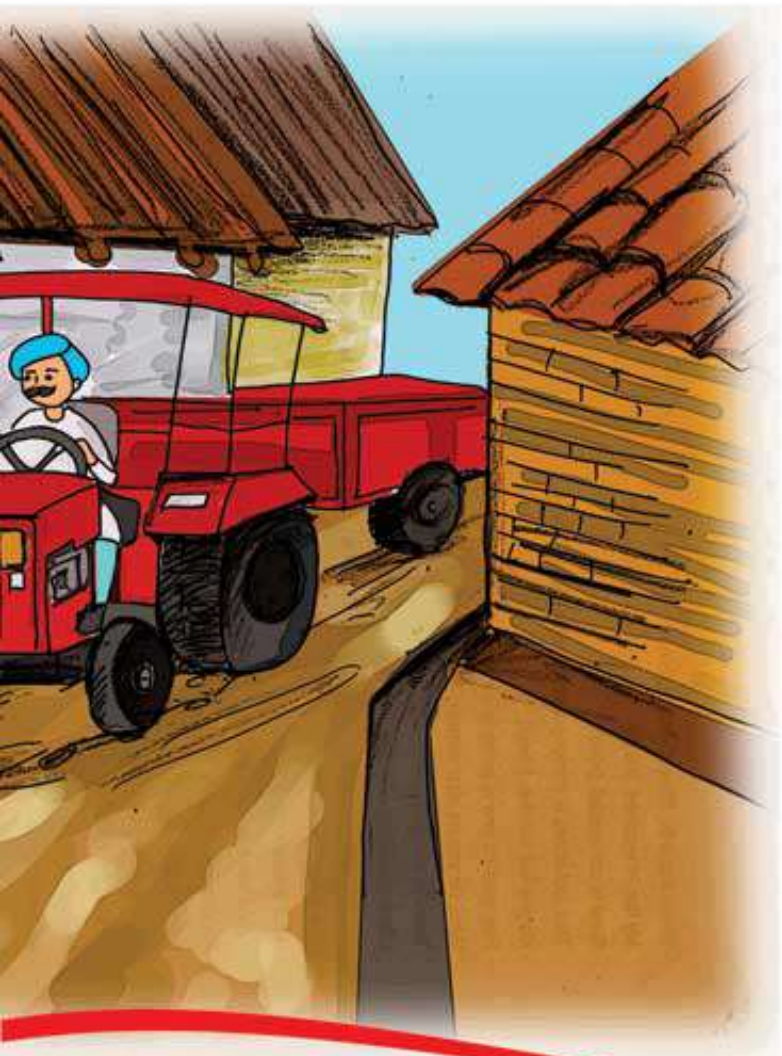

ट्रैक्टर की तेज आवाज और गति को देखकर रुक्कैया को ऐसा नहीं लगा कि ड्राइवर शरीर के कारण से उसको धीमा करेगा। जबकि ट्रैक्टर की आवाज और गति और बगल में उसकी साइकिल को निकलने के लिए कम स्थान बचा देखकर शरीफ के चेहरे पर घबराहट छा गई। रुक्कैया की दृष्टि अब शरीफ के चेहरे पर ही थी।

उसके मन की घबराहट का असर उसके हाथों पर दिखाई दिया और उसका हाथ हैंडिल से फिसल गया जिससे साइकिल लड़खड़ाई।

लड़खड़ाती साइकिल ट्रैक्टर से टकराई जिससे साइकिल को छोड़कर शरीफ ट्रैक्टर और ट्राली के बीच में जा गिरा।

ट्राली का पहिया निश्चय ही अगले पल शरीफ को कुचल देगा। सोचने विचारने का बिलकुल समय नहीं था। वहीं पर खड़ी रुक्कैया झपटकर आगे बढ़ी एकदम से झुकी और उसने शरीफ की शर्ट के कॉलर को पकड़कर बाहर की ओर एक जोर का झटका मारकर खींच लिया।

हालाँकि इस प्रयास में उसके स्वयं के शरीर का संतुलन बड़ी मुश्किल से स्थिर रह पाया और वह हल्की की लड़खड़ा गई किन्तु वह और शरीफ दोनों सुरक्षित ट्राली के पहिए की पहुँच से बाहर थे। मलबे से भरी वह ट्राली का पहिया उनसे कुछ इंच के अंतर से निकल गया था। उन दोनों के ही दिल बहुत जोर–जोर से धड़क रहे थे।

उधर ट्राली शरीफ की साइकिल को कुछलती हुई आगे बढ़ गई। साइकिल के हैंडिल की ट्रैक्टर से टकराने की आवाज ट्रैक्टर ड्राईवर ने सुनी हो या न सुनी हो किन्तु जब पीछे की पूरी ट्राली साइकिल को कुचलती हुई उसके ऊपर से निकल गई तो ड्राइवर को लगा कि कोई बड़ी गड़बड़ हो गई है। उसने तुरन्त ब्रेक मार दिए। लेकिन रुकते–रुकते भी ट्रैक्टर आगे जाकर रुका।

साइकिल के कुचलने और ड्राईवर के यकायक ब्रेक मारने से एक जोरदार आवाज हुई थी जिसकी गूँज पूरी गली में छा गई और लोग घरों से निकलकर बाहर आ गए।

सारा दृश्य उन लोगों की आँखों के सामने था। अगर कुछ पल की भी देरी हो जाती तो शरीफ का क्या होता यह सोचकर वे सब भी काँप गए। सभी ने सँकरी गली में धीरे से वाहन चलाने की सलाह दी तो उन्होंने रुक्कैया की सामयिक सूझबूझ से शरीफ को बचाने के लिए सराहना की। वाहन चालक ने कान पकड़कर अपनी इस गलती की क्षमा माँगी।

शरीफ ही नहीं यदि जरा सी चूक हो जाती तो रुक्कैया भी उसके साथ ट्राली के पहिए के नीचे आ सकती थी। बहादुर रुक्कैया ने अपनी जान पर खेलकर शरीफ की प्राणरक्षा की थी। सभी ने उसकी वीरता की सराहना की।

रुक्कैया का नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। उसको वर्ष २००२ के वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। उसे २००३ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजधानी दिल्ली में आमंत्रित किया गया। देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया। उसने देश के अन्य चुने हुए वीर बच्चों के साथ गणतंत्र दिवस की राजपथ पर निकले वाली परेड में हाथी पर बैठकर भाग लिया। जहाँ सारे देश के लोगों ने उसकी वीरता की प्रशंसा तालियाँ बजाकर की।

नन्हें मित्रो!

हर पल रहो सतर्क हमेशा, कब पड़ जाए जरूरत,
तन मन चुस्त बनाकर अपना, इसे बना लो आदत।
पता नहीं कब कौन कहाँ, करनी पड़ जाए कसरत,
काम करो सब पूरे मन से, बाकी रहे ना हसरत।।

– नई दिल्ली

तात्या टोपे जयंती १६ फरवरी १८१४

महान स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे

– चन्द्रप्रकाश पटसारिया

अंग्रेजों ने दमन नीति से, झाँसी पर अधिकार किया।
सुत–विहीन रानी झाँसी का, राज्य हड़प अतिचार किया।।
किया विरोध लक्ष्मीबाई ने, उठा क्रांति की प्रखर मशाल।
वीरांगना रानी झाँसी ने, उन्नत किया देश का भाल।।
इनके साथ थे ब्राह्मण बालक, जिनका नाम रामचंद्रराव।
अहमद नगर निकट जन्मे थे, जन्मस्थान येवला गाँव।।
शासक बाजीराव पेशवा, जिनका पुरोहित यह परिवार।
रामचन्द्र ने राजाओं की, पुरोहिताई न की स्वीकार।।
रामचंद्र थे शस्त्र के ज्ञाता, शास्त्र न इनको भाता था।
बरछी तीर कृपाण चलाना, इन्हें भले से आता था।।
शर संधान में सिद्धहस्त थे, युद्धकला में थे यह माहिर।
सम्मान मिला मखमली टोपी,दिया पेशवा ने जगजाहिर।।
हुए विभूषित जब टोपी से, तब तात्याटोपे नाम पड़ा।
रानी लक्ष्मीबाई संग थे, वीर, समर में हुआ खड़ा।।
बने आप रानी लक्ष्मी के, सर्वोच्च कुशल सेनानायक।
युद्ध नीति के कुशल खिलाड़ी, वीरों के मन सुखदायक।।
महिनों तक संग्राम चलाया, अंग्रेजों को छका दिया।
अंग्रेजी सेना को मारा, कई जगह खदेड़ा भगा दिया।।
अद्‌भुत शस्त्र सैन्य संचालन, बहुत ब्रिटिश सैनिक संहारे।
घमासान संग्राम हुआ तो, पल में विदेशी हन मारे।।
ऐसे ही इतिहास वीर ये, लड़ते–लड़ते बलिदान हुए।
लक्ष्य मार्ग में मिली वीरगति, ये अमर शहीद महान हुए।।

– दतिया (म. प्र.)

देना है तो...

चित्रकथा-

लकड़हारे की कुल्हाड़ी कुएं में गिर गई तो वह रोने लगा.
जल-देवता को तरस आ गया -
क्या ये सोने की कुल्हाड़ी तुम्हारी है?
नहीं..
तो क्या ये चांदी की कुल्हाड़ी तुम्हारी है?
जी नहीं
क्या ये ?
हां, ये मेरी कुल्हाडी है..
तुम सच बोले मैं प्रसन्न हुआ..
सोने और चांदी की कुल्हाड़ियां भी मैं तुम्हें देता हूं
नहीं चाहिए..
देना ही है तो कुछ ऐसा दो कि जीवन भर के लिए कुल्हाड़ी चलाने से मेरा पीछा छूट जाए..

पहला अनुभव

– डॉ. के. रानी

उत्तर भारत में हिमालय क्षेत्र में रहने वाला नन्हा टंकी भूरा भालू अपने माँ–पिताजी के साथ नदी से लगे हुए घने वन में रहता था। सर्दियों का मौसम था। दिन प्रति दिन सर्दी बढ़ती जा रही थी। सुबह के समय टंकी गहरी नींद में सोया हुआ था। मंची ने उसे उठाया और बोली–

''उठो बेटा! हमें भोजन ढूँढने जाना है।''

''माँ! इतनी सुबह मुझे नहीं जाना कहीं।''

''ऐसा नहीं कहते बेटा! खाने की सब जीवों को आवश्यकता होती है।''

''औरों को होती होगी मुझे नहीं है। मेरे सारे मित्र वैसे भी मुझे मोटूराम कहकर चिढ़ाते हैं।''

''मोटा होना कोई बुरी बात थोड़े ही है।''

''माँ मुझे सोने दो। मुझे नींद आ रही है। बाहर बहुत सर्दी है।''

''दोपहर में सो लेना। इस समय पहले खाना खाने चलो।'' इतना कहकर मंची ने उसे जबरदस्ती उठाया और उसे साथ लेकर नदी किनारे आ गई।

टंकी को माँ पर बड़ा क्रोध आ रहा था। पता नहीं उन्हें आजकल क्या हो गया था? सुबह उठते ही खाना ढूँढने की रट लगा देती। वह देख रहा था दिनभर मछलियाँ खा–खाकर वे तीनों बहुत मोटे हो गए थे। फिर भी माँ हर समय खाने की जिद करती रहती।

दोपहर के समय वीनू मंची और टंकी कुछ देर के लिए अपने ठिकाने पर लौट गए। मंची बोली– ''अब तुम चाहो तो कुछ देर आराम कर सकते हो। शाम को हमें फिर खाना ढूँढने के लिए निकलना है।''

''माँ! अब मेरा मन खाना खाने का जरा भी नहीं कर रहा है। मैं शाम को कहीं नहीं जाऊँगा। पता नहीं क्यों आजकल आपको खाने के अलावा कुछ सूझता ही नहीं है।'' ''तुम देख रहे हो सर्दी कितनी बढ़ गई है। हमें इन दिनों खाने की बहुत अधिक आवश्यकता रहती है।''

''लेकिन क्यों माँ? अपनी आवश्यकता के हिसाब से खाना हम प्रतिदिन ही खाते हैं।'' ''तुम्हें अभी पता नहीं है आजकल में ठंड और बढ़ जाएगी और हम उसे सह नहीं पाएँगे। अपने जीवन को बचाने के लिए हमें महीनों तक शीत निद्रा में जाना होता है।''

''शीत निद्रा! यह क्या होती है? हम हर मौसम में रोज ही सोते हैं। यह कोई अलग तरह की नींद होती है।''

''यह नींद एक दिन की नहीं तीन से छः महीने की होती है।'' ''क्या इतने समय तक हम सोते ही रहेंगे?''

''हाँ, इसीलिए हमें इन दिनों ढेर सारा खाना खाकर अपने शरीर में वसा जमा करनी है।'' माँ की बात सुनकर टंकी आश्चर्य से उनका मुँह देखने लगा।

''अभी तुम छोटे हो। इस बात को नहीं समझ सकते। तुमने आज तक यह सब देखा नहीं है। पहली बार देखोगे तो तुम्हें भी समझ में आ जाएगा।'' मंची ने उसे समझाया तो टंकी चुप हो गया। वह बीनू से बोली– ''तुमने स्थान की व्यवस्था (खोज) कर ली है जहाँ हमें शीत निद्रा में रहना है?''

''आजकल मैं इसी काम में लगा हूँ। तुम आराम करो मैं स्थान की खोज में जाता हूँ। कुछ स्थान मेरी नजर में हैं। जैसे ही उपयुक्त स्थान मिल जाएगा हम उसे रहने के लिए व्यवस्थित कर देंगे।'' इतना कहकर वह चला गया।

टंकी के दिमाग में अभी तक माँ की कही बातें घूम रही थी। उसने पूछा– ''माँ! शीत निद्रा क्या होती है?''

''कुछ जीव, जंतु और पक्षी ठंड के मौसम में बहुत अधिक जाड़ा झेल नहीं पाते। अपने को ठंड से बचाने के लिए वे किसी मांद, गुफा, मिट्टी के नीचे या सूखे पेड़ के खोखले भाग में जाकर छुप जाते हैं जहाँ उन पर सर्दी का असर न हो। ऐसी जगह पर वे बहुत समय तक सोते रहते हैं और पूरी सर्दियाँ नींद में बिता देते हैं। इसे शीत निद्रा कहते हैं।''

''हमारे शरीर पर इतने बड़े–बड़े बाल हैं। हमें सर्दी कैसे लग सकती है माँ?''

''हिमालय क्षेत्र में रहने वाले भूरे, काले भालू, ध्रुवीय भालू और एशियाई भालू सर्दियों का मौसम नींद में बिताना पसंद करते हैं। ये लंबे बालों के रहते हुए भी ठंडे मौसम की मार नहीं झेल पाते हैं और सर्दी से बचने के लिए

ऐसी जगह छुप जाते हैं जहाँ वे सर्दी से बच सकें।''

''इतने समय तक मैं कैसे सोया रहूँगा माँ?''

''तुम चिंता मत करो। यह सब कुछ अपने आप हो जाता है। इस बीच हम कुछ खाते-पीते नहीं हैं और जगह से बाहर ही नहीं आते। हमारे शरीर पर जमा वसा से हमारा जीवन चलता है। शीत निद्रा में हमारे हृदय की धड़कन बहुत कम हो जाती है। जिसके कारण शरीर चलाने के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है।''

''हम शीत निद्रा से बाहर कब आएंगे? मुझे अपने मित्रों की बहुत याद आएगी।'' ''जब सर्दियाँ चली जाएंगी और गर्मियों की शुरुआत हो जाएगी तक हम शीत निद्रा से जागेंगे। इतने दिनों तक बिना खाए-पिए हमारा शरीर दुबला हो जाता है। कुछ ही दिनों में हम फिर से सामान्य जीवन जीने लगते हैं और खा-पीकर तंदुरुस्त बन जाते हैं।'' ''केवल भालू ही शीत निद्रा में जाते हैं और सब जीव-जंतु मजे से सर्दी का आनंद लेते हैं?''

उसकी बात सुनकर मंची हंसने लगी और बोली- ''ऐसा नहीं है। हमारे रुचिकर भोजन शहद एकत्र करने वाली छोटी कामगार मधुमक्खियाँ अत्यधिक सर्दी सहन नहीं कर पाती और मर जाती हैं। केवल अंडे देने वाली रानी मधुमक्खी तीन से छः महिने के लिए किसी पेड़ के छेद में या जमीन के अंदर गड्ढा बनाकर रहती है। गर्मी आने पर वह फिर से अपना दल बना लेती है। इसके अलावा सांप, मेंढक, सेही, कछुए, घोंघे और कुछ विशेष प्रजाति की चिड़िया भी ठंड से बचाव के लिए शीत निद्रा का सहारा लेते हैं।'' मंची बोली।

माँ के मुँह से यह सब बातें सुनकर टंकी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। माँ ने उसे शीत निद्रा के बारे में और भी छोटी-छोटी कई बातें समझाई। कुछ देर में उसके पिताजी बीनू वापस आ गए और बोले- ''आज मुझे शीत निद्रा के लिए एक बहुत अच्छा स्थान मिल गया है।''

''चलो परेशानी समाप्त हुई। मैं सोच रही थी कि छोटे बच्चे के साथ शीत निद्रा में जाने पर हमें परेशानी का सामना करना पड़ेगा।'' ''मैंने एक गुफा देखी है। उसमें हम तीनों आराम से रह सकते हैं। वहाँ हमें कोई परेशानी नहीं होगी। वहाँ जाने के बाद मैं गुफा को अच्छे से बंद कर

दूँगा ताकि किसी को पता न चल सके इसके अंदर भालू रहते हैं।'' शाम हुई। आज टंकी चुपचाप माँ के साथ नदी किनारे चला गया। इस समय सर्दी बहुत थी। वे जल्दी ही अपने ठिकाने पर लौट आए। मंची बोली- ''छोटे बच्चे के साथ अब हमें सर्दी में बाहर नहीं निकलना चाहिए और शीत निद्रा में चले जाना चाहिए।''

''तुम ठीक कहती हो। टंकी का यह पहला अनुभव है। उसे यह बात सुनकर थोड़ा अटपटा लग रहा है। पीढ़ियों से हमारे पूर्वज यही सब करते आए हैं। धीरे-धीरे वह भी अपनी परंपरा और आवश्यकता को समझने लगेगा।'' टंकी उनकी बात ध्यान से सुनता रहा। उसे अब शीत निद्रा में जाने का इंतजार था। उसने सोच लिया वह इसके बारे में अपने भालू मित्रों को कुछ नहीं बताएगा। उसके मित्रों ने भी इस बारे में कोई बात नहीं की थी। आखिर वे भी शीत निद्रा में जाने वाले होंगे। हो सकता है उसका मित्र चंकू, भालू शीत निद्रा में सो गया हो। वह तीन दिन से खेलने भी नहीं आया था।

किसी को पता नहीं था वह कहाँ है? लेकिन कुछ महीने के लिए शीत निद्रा में जाने से पहले वह अपने सबसे अच्छे मित्र हनी और बिट्टू से ही को नमस्ते अवश्य कहेगा। माँ ने बताया था इस हिमालयी क्षेत्र के से ही भी उनकी तरह कई महिनों के लिए शीत निद्रा में चले जाते हैं।

- चूखूवाला (उत्तराखण्ड)

प्रसंग–२७ फरवरी पुण्यतिथि

जब आजाद ने सर पर परात उठाई

– डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

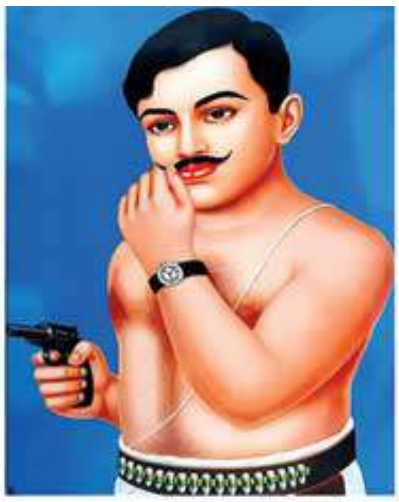

क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेज सरकार से लोहा लेने के लिए क्रांतिकारी–गतिविधियों में काफी लंबा फरारी जीवन बिताया। आजाद के फरारी जीवन की एक घटना इस प्रकार से है–

एक बार चन्द्रशेखर अपने एक परिचित मित्र के घर पर कानपुर (उ. प्र.) में ठहरे हुए थे। रक्षा–बंधन का दिन था। उनकी पत्नी परात में ढेर–सारे लड्डू भरकर, अपने मायके जाने के लिए जीने के पास खड़ी थीं। वहीं आजाद अपनी मैली–सी धोती पहने खड़े थे। तभी अचानक से नीचे से आवाज आई। ''क्या मैं ऊपर आ सकता हूँ।'' और आवाज के साथ एक पुलिस का दरोगा ऊपर आता दिखाई दिया। यह दरोगा कुछ पर्चों की खोज में पहले भी कई बार आ चुका था। उसे पर्चे छापने वाली 'साईक्लो स्टाईल मशीन' की तलाश थी।

ज्योंहि मित्र की पत्नी ने दरोगा को देखा वे समझ गईं– कहीं दरोगा, चन्द्रशेखर आजाद को न पहचान ले। तब तो बड़ी गड़बड़ हो जाएगी।

मित्र की पत्नी ने आजाद से कहा– ''क्यों रे! परात उठा।'' आजाद ने संकेत समझकर तुरन्त लड्डुओं की परात अपने सर पर उठा ली। मित्र की पत्नी दरोगा से हँसकर बोलीं– ''भैया के घर जा रही थी। पर आज पहली राखी आपको ही बाँधूँगी।'' दरोगा ने मित्र की पत्नी की बात पर दाँत निकाल दिए। दरोगा को राखी बाँधी गई। फिर आजाद को सम्बोधित कर डाँटते हुए मित्र–पत्नी बोलीं– ''अबे ओ उल्लू! परात नीचे कर, चार लड्डू दरोगा जी को दे।'' आजाद ने चार लड्डू दरोगा जी को दिए, और मित्र की पत्नी के साथ घर से बाहर हो लिए। दरोगा चन्द्रशेखर आजाद को पहचान न सका। वे तो झट से नौकर बन गए थे।

– लश्कर ग्वालियर (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 05

संकेत:– – देवांशु वत्स

1. किसी को बुलाना।
2. वर्त्तमान दिन में।
3. आज्ञा।
4. धावा, चढ़ाई।
5. जांच, परीक्षा, किसी को आजमाना।
6. पद्धति के प्रतिकूल।

1.	आ					
2.	आ					
3.	आ					
4.	आ					
5.	आ					
6.	आ					

उत्तर: 1. आ, 2. आज, 3. आज्ञा, 4. आक्रमण, 5. आजमाइश, 6. आचार विरुद्ध।

कितने दाने कितने पक्षी

– शिव मोहन यादव

छत पर कुछ गेहूँ बिखराए,
पक्षी दाना चुगने आए।
दाने साठ मोर खा जाए,
केवल एक मोर ही आए।
पैंसठ गौरैया आती हैं,
छह–छह दाने सब खाती हैं।
नौ तीतर दस तोते आए,
दाने आठ–आठ ही खाए।
बोलो कितने पक्षी आए,
सबने कितने दाने खाए।
पाँच ग्राम का है एक दाना,
तुमसे पूछूँ प्रश्न सुहाना।
जो भी इसकी तोल बताए,
अच्छा बच्चा माना जाए।

– कानपुर देहात (उ. प्र.)

'देवपुत्र' का अक्टूबर २०२१ का अंक प्राप्त करने के बाद उसे पढ़कर बहुत प्रसन्नता का बोध स्वाभाविक बात है। तस्वीर के अनुसार से फ्रेम की तरह सामग्री के साथ इंद्रधनुषी सुंदर चित्र हैं। रचनाएँ छोटी होकर भी गुणात्मक दृष्टि से प्रेरक हैं। संपादकीय के माध्यम से आपके विचारों को अनुकरणीय कहा जा सकता है।

यह अंक सृष्टि आपकी पारखी दृष्टि का उदाहरण है। बधाई सहित हार्दिक शुभकामनाएँ।

– अखिलेश कुमार खरे 'अखिल'
कछारगाँव (बड़ा) (म. प्र.)

उत्सव की तैयारी का उत्तर

उत्तर :– रातरानी, चाँदनी, हजारी, जूही, गुलाब, कुमुदनी, कमल, गुड़हल, कैतकी, रजनीगन्धा, मोगरा।

राष्ट्र चेतना के कवि : गायक प्रदीप

– डॉ. रामसिंह यादव

हिन्दी फिल्मी दुनिया में मुंबई की चकाचौंध भरे वातावरण में रहकर भी फिल्मी कवियों–गीतकारों में सबसे अलग अपनी पहचान बनाए रखने वाले राष्ट्रवादी गीतों के रचयिता राष्ट्र चेतना के कवि प्रदीप का नाम सबसे पहले आता है। अपना साठ वर्ष की फिल्मी यात्रा तय करने वाले प्रदीप ने अपने देशभक्ति, राष्ट्रवादी गीतों के माध्यम से सारे देश में आजादी से पहले और आजादी के बाद जिस राष्ट्रीय चेतना का संचार किया वह एक उदाहरण है। उनके लिखे गीतों में सभी वर्ग के पढ़े–लिखे व्यक्तियों से लेकर ठेठ ग्रामीण अंचलों के आम आदमी को झकझोरने की व्यवस्था पर प्रहार करने की असीम शक्ति थी। उनके गीत आज भी प्रेरणा स्रोत हैं।

कवि प्रदीप का जन्म उज्जैन जिले की तहसील बड़नगर में ६ फरवरी १९१४ को हुआ था। प्रदीप का वास्तविक नाम रामचन्द्र द्विवेदी था। प्रदीप ने उज्जैन के माधव कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की बाद में वे उच्च शिक्षा के लिए बड़े भाई के पास इलाहाबाद चले गए थे।

वहीं उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से आगे की पढ़ाई की। उस दौर में लखनऊ और इलाहाबाद साहित्यकारों और राजनीतिक गतिविधियों का बहुत बड़ा केन्द्र था। देश पर अंग्रेजी शासन था समग्र देश परतंत्रता गुलामी की लोह जंजीरों में जकड़ा हुआ था।

प्रदीप को तभी वहाँ के सिद्धहस्त कवियों साहित्यकारों के संपर्क में आने का अवसर मिला। उनको वर्ष १९३९ में विले पार्ले (मुंबई) के एक विद्यालय में कुछ मित्रों के साथ कवि गोष्ठी में जाने का अवसर मिला।

वहीं पर उनकी भेंट श्री एन. आचार्य से हुई। आचार्य जी ने ही उस समय की मशहूर फिल्म निर्माण संस्था बाम्बे टॉकिज के संस्थापक मशहूर फिल्म अभिनेत्री देविकारानी और उनके पति हिमांशुराय से प्रदीप को एक युवा कवि के रूप में मिलवाया था।

देविकारानी ने प्रदीप को अपनी फिल्म कंगन के लिए गीत लिखने को कहा। प्रदीप ने कंगन, बंधन और झूला फिल्मों में गीत लिखकर अपने आपको मुंबई की फिल्मी दुनिया में स्थापित कर लिया।

इसके बाद वर्ष १९४३ में रिलीज हुई अशोक कुमार अभिनीत फिल्म 'किस्मत' के गाने लिखे। किस्मत फिल्म ने तो प्रदीप की किस्मत ही बदल दी। उनकी चोटी के गीतकारों में गिनती होने लगी।

उसके बाद वे नास्तिक, पुनर्मिलन, संबंध, नया संसार, पैगाम, जागृति और अन्य एक से बढ़कर एक फिल्में प्रदर्शित हुईं जिनके गीत प्रदीप ने लिखे थे।

उन फिल्मों के गीतों ने प्रदीप को इतनी ऊँचाई पर ऐसी जगह स्थापित कर दिया था कि अन्य कोई दूसरा गीतकार वह स्थान नहीं ले सकता था। इस समय उन्होंने अपने लिखे हुए कुछ गीत स्वयं भी फिल्मों में गाए। उनकी अनूठी आवाज में जो गीत गाये वह आज भी बड़े ही चाव से सुने जाते हैं–

कवि प्रदीप इस दुनिया में अब नहीं हैं। वे ११ दिसम्बर १९९८ को इस संसार को छोड़कर चले गए। किन्तु उनके देशप्रेम, देशभक्ति की भावना से लिखे और गाये गीत आज भी जन जीवन को प्रेरणा देते हैं। फिल्म किस्मत को यह गीत तो परतंत्र देश में उस

समय हलचल मचा चुका था–

आज हिमालय की चोंटी से फिर हमने ललकारा है
दूर हटो ऐ दुनियावालों हिन्दुस्थान हमारा है.....।

अगस्त १९४२ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' अंग्रेजों के विरुद्ध जोरों पर था, पूरे देश में व्यापक प्रभाव गांधीजी के उस आंदोलन का फैल चुका था। फिल्म बंधन में गांधी बाबा से प्रेरणा लेकर प्रदीप ने यह गीत लिखा था जो बाद में भारतीय सेना का संचलन गीत (मार्चिंग सांग) बन गया था।

चल चल रे नौजवान चल चल रे नौजवान,
रुकना तेरा काम नहीं चलते रहना तेरी शान।

उनके गीतों की विशिष्टता यह है कि उनमें एक ही संदेश होता है। भारत की आजादी के बाद उन्होंने जो गीत फिल्म जागृति के लिए लिखा था–

हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के.....।

आजादी का महत्व उन्होंने समझाया। वहीं हमेशा उसकी रक्षा करने की शिक्षा भी अपने गीतों के माध्यम से देते रहते थे।

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिन्दुस्तान की।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की।
(जागृति)

राष्ट्रवादी भावना के उस कवि प्रदीप ने बच्चों को आने वाली भारत की नई पीढ़ी को राष्ट्रभक्तों, क्रांतिकारियों का बलिदान याद कराते हुए देश पर गर्व करने का पाठ पढ़ाया जो स्तुत्य है।

वर्ष १९६२ में भारत चीन की लड़ाई से कवि रामचंद्र द्विवेदी 'प्रदीप' को भी चोंट पहुँची थी। जो लोग अपने देश की रक्षा करते हुए बलिदान हुए थे प्रदीप ने उन बलिदानियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि स्वरूप यह गीत लिखकर कृतज्ञता व्यक्त की थी–

ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी।

सदा अमर इस गीत को स्वर साम्रज्ञी मशहूर गायिका लता मंगेशकर ने अपनी सुरीली आवाज दी। सुनकर पंडित नेहरू की भी आँख में आँसू आ गए और लता से बोले– ''ऐ लड़की तूने हमें रुला दिया'' यह गीत किसने लिखा है तब बताया गया कि यह गीत कवि प्रदीप ने लिखा है जिनकी उन्होंने खूब प्रशंसा की थी।

उनके द्वारा लिखा यह गीत युवकों के लिए कितना महत्वपूर्ण लगता हैं–

अब वक्त आ गया, मेरे हँसते हुए फूलों,
उठो छलांग मार के, आकाश को छू लो,
तुम गाड़ दो गगन में, तिरंगा उछाल के.....।

कवि प्रदीप ने फिल्मी दुनिया में रहकर भी आज के लेखकों, गीतकारों की तरह समाज को विकृत करने, अश्लीलता परोसने, नग्नता फैलाकर लोगों को नर्क की ओर ढकेलने का कभी प्रयास नहीं किया। उन्होंने हमेशा युवकों को देशवासियों को देश के प्रति अपने कर्त्तव्य एवं उसकी उन्नति तरक्की करने की प्रेरणा दी। उन्होंने देश की स्वर्णिम अतीत, सांस्कृतिक गौरव, सभ्यता, मर्यादा और ऊँचाई परम्पराओं को बनाए रखना अपना धर्म और कर्तव्य मानकर कार्य किया।

प्रदीप जी की प्रतिभा और कवित्व शक्ति को देखकर महान फिल्म निर्माता निर्देशक कलाकार राजकपूर भी मुग्ध हो गए थे। फिल्म मशाल का वह गीत जब उन्होंने सुना–

ऊपर गगन विशाल, नीचे गहरा पाताल,
वाह मेरे मालिक, तूने कर दिया कमाल.....।

तो वे स्वयं प्रदीपजी के पास गए और कहा– ''वाह पंडित जी! आप धन्य हैं आपने तो कमाल ही कर दिया है।''

राष्ट्रपति के हाथों पद्मभूषण का सम्मान

अलंकार लेने जब रामचंद्र द्विवेदी कवि प्रदीप गए तब उन्होंने दिल्ली में बातचीत के समय कहा था कि– ''आप इस पर अवश्य आश्चर्य कर सकते हैं कि मैंने मुंबई की फिल्मी दुनिया में कैसे...? किस प्रकार देशभक्ति के और धार्मिक गीत लिखकर लम्बा जीवन तय किया है।

जीवन के अंतिम पड़ाव पर 'दादा साहेब फालके पुरस्कार' से सम्मानित राष्ट्रकवि प्रदीप जी से मुझे मिलने का भेंट करने का और चार–पाँच घण्टे बैठकर उनके साथ चर्चा करने का वह उनके अनुभव सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

सी. रामचंद्र, एस. डी. बर्मन और मदनमोहन जैसे दिग्गज संगीतकारों के साथ काम करने वाले गीतकार कवि प्रदीप आज के मौजूदा संगीतकारों और फिल्मकारों से बिलकुल संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था कि संगीत की मिठास समाप्त हो गई है।

उसकी जगह गति ने ले ली है उनका मानना था कि अच्छे गीतों का फिल्म में अब कोई महत्व नहीं रह गया है आज के गीत फिल्मों में थिगले (पेबंद) की तरह दिखते हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि फिल्में नहीं कथा साहित्य में भी गीत और कविता का महत्व कम होता जा रहा है।

एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था कि आज गद्य साहित्य इतना समर्थ हो गया है कि आप कोई भी विचार उससे आसानी से व्यक्त कर सकते हैं जबकि पद्य में इस विशेषता का आभाव बढ़ता जा रहा है। प्रदीप जी ने बेबाक व आत्मीयता के साथ मुझसे बातचीत की थी और बताया था कि हिन्दी फिल्मों में उसमें गीतों की दुर्दशा के लिए माफिया तस्करों के धन को जिम्मेदार बताया।

अपरिमित लोकप्रियता एवं सम्मान पाकर भी प्रदीप जी में अहंकार नहीं था। अब वे हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु आज भी उनकी यादे और गीत अमर हैं।

– उज्जैन (म. प्र.)

कविता

जीवों के प्राण बचाएँ

– उदय मेघवाल 'उदय'

पेड़ों का कर दिया सफाया,
मानव ने बेखटके।
जंगल काटे और बनाई,
लंबी चौड़ी सड़कें।।

सड़कों पर नित चलते वाहन,
होती तेज रफ्तार।
जंगल के चौपाए फिर तो,
कैसे करें पथ पार?

भालू, हिरन, बाघ चौपाए,
होते निपट नादान।
वाहन की चपेट में आकर,
गँवाते अपनी जान।।

इसीलिए हम सब वाहन को,
रखकर ध्यान चलाएँ।
बिना मौत मरते जीवों के,
हम सब प्राण बचाएँ।।

– निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

उल्टी गंगा

चित्रकथा: देवांशु वत्स

लाँसनायक सुन्दर सिंह

वह १८ मार्च १९५६ की आधी रात थी। चौथी जम्मू व कश्मीर इंफैंट्री फिरोजपुर के पास हुसैनीवाला में तैनात थी कि पाकिस्तानी सेना ने आकस्मिक हमला कर बाँध के किनारों पर कब्जा करने का प्रयत्न किया।

हमला अचानक व जोरदार था पर बाँध के दाहिने भाग से हमारी सेना की इस टुकड़ी ने उन्हें खदेड़ ही दिया। लेकिन बाँध का एक भाग जो अग्रिम भाग था वह दूसरा किनारा अभी भी दुश्मन के पंजे में दबोचा हुआ था। वे लाइट मशीनगनों से बाँध के दाहिने भाग और उस पार के नौका केन्द्र पर गोलियाँ बरसा रहे थे।

अपनी सेना के सामने तीन प्राथमिकताएँ थी बाँध पर कब्जा रखना, नदी पार अपने सैनिकों तक गोला–बारूद पहुँचाना व हताहतों को निकालना। तड़ातड़ अनवरत चल रही शत्रु सेना की गोली बारी में यह बड़ी कठिन चुनौती थी।

सैनिकों से ही पूछा गया– ''कौन–कौन दुश्मनों को मारकर यह काम करने को तैयार है?'' लाँसनायक सुन्दर सिंह ने स्वयं को प्रस्तुत किया। वे १९४७ में भी अपनी बहादुरी व संघर्ष क्षमता का परिचय दे चुके थे और अभी बाँध के केन्द्रीय सेक्टर पर मौर्चा जमाए थे।

१४ फरवरी १९२९ को जम्मूकश्मीर के पुँछ जिले में चौक हंडन गाँव में जन्में यह वीर कश्मीरी सिख परिवार के श्री कल्याणसिंह के लाल थे। ये १९४७ में ही जम्मूकश्मीर राज्य बल में भर्ती हो गए थे जो १९५७ में यह बल भारतीय सेना में विलय हुआ और जम्मूकश्मीर राइफल्स कहलाने लगा जिसकी चौथी बटालियन में इस समय वे लाँसनायक थे। बाद में वे ऑनरेरी कैप्टन के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे पर उनका साहस सारी बटालियन में विख्यात था।

छः हथगोले लेकर लाँसनायक सुंदर सिंह १०० मीटर रेंगते हुए आगे बढ़े फिर वैसे ही दुश्मन के कब्जाए बाँध के दाहिने भाग में भी ५० मीटर रेंगते हुए गए। यह बहुत पथरीला क्षेत्र था। शत्रु का अड्डा सामने था और उन्हें अपनी मारक क्षमता पर विश्वास पहला हथगोला फेंका दुश्मन के तीन सैनिक निष्प्राण हुए। गोलीबारी थम गई सुंदरसिंह लहुलुहान थे पर आगे बढ़े सारे असले के साथ वहाँ कब्जा किया। अपने मृत साथियों को वहाँ से लाने हेतु उन्हें तीन बार वहाँ जाना पड़ा।

अतुल्य साहस से अपने स्वयं स्वीकृत दायित्व को सूझबूझ व बहादुरी से पूर्ण करने के लिए उन्हें अशोकचक्र से विभूषित किया गया।

श्रद्धांजलि

केप्टन वरुणसिंह भी नहीं रहे

जनरल बिपिन रावत के साथ हेलिकाप्टर दुर्घटना में काल कवलित लोगों में इस दुर्घटना में एकमात्र जीवित बचे केप्टन वरुणसिंह भी अन्ततः १५ दिसम्बर २०२१ की प्रातः दिवंगत हो गए।

देश के इस साहसी सपूत को देवपुत्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पृथ्वी ग्रह का एलियन

– विनीता सिंह चौहान

समय आधुनिकता और तकनीकी के पंख लगाकर उड़ रहा था। वर्ष २०२५ के बाद.... धीरे धीरे तकनीकी मानव जीवन पर हावी होने लगी... और हम पहुँच गए २०८० में।

देखा जाए तो ४५० वर्ष पूर्व हम अंग्रेजों के गुलाम हुए थे ऐसा हमारे पूर्वज और भारतीय इतिहास बताता है। लेकिन हिम्मत, एकता, संगठन और सूझबूझ के साथ हमने अपनी आजादी को प्राप्त भी कर लिया। और हमारे हृदयों में मनुष्यों के प्रति और देश के प्रति प्रेम की भावना थी।

परंतु अब यह जो हम २०८० के मानव हैं। पूरी तरह से तकनीकी के दास हैं। सोचो सुबह से रात तक, जन्म से मृत्यु तक केवल हमें तकनीकी नियंत्रण करती है हमारा जीवन तकनीकी के अधीन है।

एक व्यक्ति सुबह उठता है। बिस्तर के पास ही कई तरह के रिमोट, कंट्रोल पैनल्स और रोबोट हैं। सिग्नल मिलते ही रोबोट आपके दैनिक कार्यों के लिए उपस्थित हो जाता है।

धरती में पानी समाप्त हो चुका है, खेत-खलिहान बहुत दूर की बातें हो गईं, घर अब लैब बन चुके हैं। आज के ३० वर्ष पहले तो घरों में कपड़े भी धोए जाते थे, नहाया भी जाता था। लेकिन जब पानी ही समाप्त हो गया है तो इन सब चीजों का प्रश्न ही नहीं उठता। अब कपड़े वाशप्रूफ है। आपने उनको जोरों से झटका और सेनीटाइज करके वापस से पहन लिया।

पानी मानव शरीर के लिए अति आवश्यक है। ७०% पानी ही शरीर में। इसकी पूर्ति के लिए अब हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के २:१ के अनुपात में बनाए गए वॉटर मॉलिक्यूल बबल्स हैं। जिन्हें आप प्यास लगने पर लेते हैं और आपकी पानी की पूर्ति हो जाती है।

भूख लगने पर अनाज नहीं है। तो इसके लिए भी वैज्ञानिकों ने ऐसी कैप्सूल्स का आविष्कार कर लिया है कि आपको जब भूख लगे इसे ले लीजिए आपकी भूख मिट जाएगी।

तकनीकियों के साथ पढ़-लिखकर तकनीकी मनुष्य बन गया है।

वर्ष २०८० अब व्यक्ति का घर लैब होता है। जिंदगी उनकी लैब होती है। यह भविष्य होगा २०८० में पृथ्वी का। तब तक शायद मंगल ग्रह में भी जीवन विकसित हो जाएगा, वहाँ पर भी सभ्यता विकसित हो जाएगी। और तब यहाँ से पृथ्वी का मनुष्य यदि मंगल पर जाता है तो शायद पृथ्वी ग्रह का एलियन कहलाएगा।

जैसा कि हम कल्पना करते हैं दूसरे ग्रहों में एलियन होते हैं। जब मनुष्य में मनुष्यता समाप्त हो जाती है तब शायद वह एलियन बन जाते हैं जो पूरी तरह से तकनीकी मानव होते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

धरती का इंद्रधनुष

– नीलम राकेश

रविवार का दिन था पूरा घर अलसाया हुआ था। कॉल बेल की घंटी बजते ही माँ ने दरवाजा खोला। सामने एक अनजान बच्चा खड़ा था। ''नमस्ते काकी! मैं विपुल, शिवम् का नया मित्र, अभी एक सप्ताह पहले ही मेरा प्रवेश शिवम् की कक्षा में हुआ है।'' हाथ जोड़कर विपुल बोला। ''आओ विपुल।'' कहते हुए माँ ने पूरा दरवाजा खोल दिया।

विपुल को देखते ही शिवम् चहका। ''विपुल!!'' ''मैंने कहा था ना, मैं आऊँगा। देख मैं आ गया।'' विपुल ने नाटकीय अंदाज में अपने हाथ हिलाए। उसकी अदा पर सबके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। ''सच में भाई! तुम तो बहुत सयाने निकले। मेरा तो अभी सवेरा हो रहा है।'' शुभम् ने दोनों हाथ फैलाकर अंगड़ाई ली। ''अब फटाफट उठो और मुझे अपने प्यारे मित्रों से मिलवाओ।'' विपुल ने आदेश सुनाया। ''सेवक अवश्य आदेश का पालन करेगा। आपने अपना वचन निभाया, तो मैं अपना वचन भी निभाऊँगा।'' खड़े होकर, झुककर प्रणाम करने वाले अंदाज में शिवम् बोला।

माँ–पिता जी दोनों बच्चों की इस प्यार भरी मासूमियत पर खिलखिला उठे। माँ हँसते हुए बोलीं। ''अच्छा अब तुम दोनों मस्ती करो, मैं तुम दोनों के लिए गाजर का हलवा बनाती हूँ।'' ''क्या बढ़िया विचार है! काकी मेरे मुँह में तो अभी से पानी आ रहा है। मुझे गाजर का हलवा बहुत पसंद हैं।'' विपुल बोला। ''मेरा तो, 'ऑल टाइम फेवरेट है।''' शिवम् ने आगे जोड़ा। ''अच्छा अब बातें मत बनाओ। पहले मेरी मित्रता अपने मित्रों से कराओ।''

माँ ने आश्चर्य से शिवम् की ओर देखा। ''कुछ नहीं माँ! हम दोनों ऊपर छत पर जा रहे हैं।'' कहते हुए शिवम्, विपुल के साथ छूमंतर हो गया। ''तेरे मित्र छत पर हैं? फिर तू नीचे क्या कर रहा था?'' सीढ़ी चढ़ते हुए विपुल ने पूछा। ''विपुल, तेरे अंदर ना धैर्य ही नहीं है। ऊपर तो पहुँच। सब समझ में आ जाएगा।'' ''ओह हो! हे भगवान!! इतना सुन्दर बागीचा? शिवम् तू सच में बहुत भाग्यशाली है।'' दोनों हाथ गाल पर रखे हुए विपुल चारों ओर खिले फूलों की सुंदरता में खो–सा गया।

''.....'' मौन शिवम् अपने मित्र की प्रतिक्रिया देखता रहा। ''छत पर, गमलों में इतना सुंदर बागीचा! मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।'' मुग्ध भाव से विपुल बोला। ''यह मेरी सबसे प्रिय जगह है।'' शिवम् बोला। ''होगी ही। यह तो जगह ही ऐसी है। और तेरे मित्र?'' आचनक जैसे विपुल को याद आया। ''ये फूल ही मेरे सबसे प्यारे मित्र हैं।'' शिवम् मुस्कुराया। ''अ.... मैं समझा नहीं?'' आश्चर्य से विपुल, शिवम् की ओर घूम गया।

''मित्र! मैं बहुत छोटा था। शायद चार वर्ष का रहा होऊँगा। एक दिन सुबह आकाश में मुझे बहुत सुन्दर ढेर सारे रंगों की माला सी दिखाई दी। मैं खुशी से पागल हो गया। दादा जी मेरे पास में थे मैं उन्हें दिखाने लगा। उन्होंने बताया कि इसका नाम इंद्रधनुष है।'' ''फिर क्या हुआ?'' विपुल की उत्सुकता जग गई थी। ''फिर क्या, मुझे तो इंद्रधनुष चाहिए था। और मेरी बाल हठ शुरू हो गई। मैंने रो-रोकर घर सिर पर उठा लिया।'' ''वाह मेरे मित्र!'' विपुल हँसा।

''फिर दादा जी ने मुझे गोद में उठाया और लेकर घर से थोड़ी दूर एक बागीचे में गए। वहाँ पर उन्होंने मुझे बहुत सारे फूल दिखाए और बताया, बेटा, ईश्वर ने बहुत सुन्दर-सुन्दर रंग बनाए और उन रंगों को धरती पर इन फूलों में रूप में बिखरा दिया। और आकाश पर इंद्रधनुष के रूप में सजा दिया। अब तुम इन फूलों से मित्रता कर लो। तब धरती का यह इंद्रधनुष तुम्हारे पास होगा। और बस, उसी दिन से इन फूलों से मेरी मित्रता हो गई। ये मेरे इंद्रधनुष हैं। मेरे दादा जी के आशीर्वाद के रूप में हमेशा मेरे साथ रहते हैं। और मुझे हमेशा प्रसन्नता देते हैं।'' शिवम् ने अपनी बात पूरी की।

''शिवम्! तेरे ये प्यारे मित्र आज से मेरे भी पक्के साथी होंगे। मैं भी कुछ गमले लाकर इंद्रधनुष को अपने घर लाऊँगा।'' ''और फिर मैं तेरे घर, तेरे मित्रों से मिलने आऊँगा।'' चहककर शिवम् बोला। और दोनों मित्र धरती के इंद्रधनुष के सौंदर्य में खो गए।

– लखनऊ (उ. प्र.)

कविता

वसन्त आया

– राममोहन शर्मा 'मोहन'

वसन्त आया, बही पवन है।
खिले सुमन से, सुमन-सुमन हैं।।
सरस्वती – माँ,
शुभागमन है,
सुकवि निराला,
हुये मगन हैं।।
विजय हकीकत, धरम सनातन।
स्वदेश महिमा, प्रसन्न मन हैं।।

– जालौन (उ. प्र.)

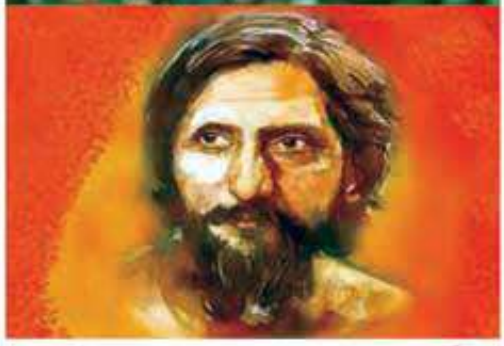

अम्मू

– पद्मिनी अबरोल

हम पहाड़ वालों के जीवन की अलग ही परेशानियाँ होती हैं। इन्हें केवल वहीं समझ सकता है जो स्वयं कभी यहाँ रहा हो। कभी तेज चटखती धूप तो कभी हड्डियों को कंपा देने वाली ठंड और कभी कई दिनों तक न रुकने वाली मूसलाधार बारिश।

ऐसे ही बरसातों के दिनों की बात है। लगातार पाँच दिनों की बरसात के बाद आज मौसम ने कुछ करवट बदली थी। आज बादल छंटने लगे थे और स्वच्छ गुनगुनी धूप निकल आई थी। आस-पास के घरों के दरवाजे खुलने लगे और सभी औरतें अपने-अपने घरों से गीले कपड़े, बच्चों के बिस्तर तथा दरियाँ आदि ला-लाकर बाहर बरामदों में, छतों पर सूखने डालने लगीं। पूरा मोहल्ला कई दिनों बाद तरह-तरह की आवाजों से फिर से आनंदित होने लगा।

सहसा अम्मू की निश्छल खिलखिलाहट ने मेरा ध्यान खींचा। उसके हाथ में कुछ पुराने खिलौने थे, वह अपनी छोटी बहन सक्कू के साथ मेरी खिड़की के पास ही खड़ा बतिया रहा था। आयु में बाकी बच्चों से कुछ बड़ा होने के कारण या सेहत में अधिक स्वस्थ दिखने के कारण अनायास ही न जाने कब वह बच्चों की टोली का मुखिया बन बैठा, इसका अनुमान लगाना तो मुश्किल था। पर अपने दो वर्षों के अनुभव में यह तो मैंने जान ही लिया था कि सभी बच्चे उसकी बातें गौर से सुनते तथा उसके निर्णय पर न चाहते हुए भी राजी हो जाते थे। उसमें नेतृत्व की गजब की क्षमता थी।

अपनी बात को वह इस तरह रखता था कि सभी मानना ही पड़ता। ऐसे-ऐसे तर्क देता, ऐसी-ऐसी बीती बातें याद कराता कि न मानने का प्रश्न ही नहीं उठता था। बच्चे नतमस्तक हो जाते और अम्मू का लोहा मानते। उसकी स्मरण शक्ति, नेतृत्व क्षमता को देखकर मैं भी अचंभित होती। अध्यापिका होने के कारण अम्मू के व्यक्तित्व के गुणों से मैं अनजान न थी बल्कि उसने मुझे प्रभावित कर लिया था।

मैं जानती थी कि यदि उसे सही मार्गदर्शन मिले तो वह भविष्य में अवश्य ही कुछ विशेष कर सकता है। पर निम्न मध्यम वर्गीय हम साधारण परिवारों में माता-पिता अथवा परिजनों को समझाना और शिक्षित करना केवल कठिन कार्य ही नहीं है बल्कि टेढ़ी खीर है और फिर परिवार में सभी के सोचने का तरीका भी तो अलग अपना-अपना होता है।

मैंने कई बार अवसर मिलने पर उसके पिता से बात करनी चाही पर उनके लिए इन बेकार की बातों के लिए समय नहीं था, उनका कहना था- ''अरेऽऽ! हम जो क्या पढ़े कभी इंग्लिश स्कूलों में? हम तो सरकारी विद्यालय में पढ़े हैं रे! और कमा कर अपने परिवार को पाल रहे हैं कि नहीं? पर आजकल का तो जमाना ही अलग हो गया। सबको अंग्रेजी स्कूल में ही पढ़ना है। किसी तरह पेट काट कर फीस भर रहे हैं और पढ़ा रहें हैं अंग्रेजी स्कूलों में बच्चों को! बस पढ़-लिखकर कहीं नौकरी पा जायेंगे तो जीवन सफल हुआ समझो। ना! बाकी क्या है?'' कहकर उन्होंने प्रश्नभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने चुप रहना ही उचित समझा, मैं समझ गई थी कि उनकी दृष्टि में किताबी ज्ञान के सामने 'प्रतिभा' का कोई औचित्य नहीं है।

एक दिन बातों-बातों में मैंने अम्मू की माँ से बात करते का प्रयत्न किया कि वह अम्मू की कुछ जिज्ञासाओं को तो उचित तरीकों से शांत किया करें, उसके प्रश्नों को कम से कम सुना तो करें। पर दिनभर गृहस्थी के अनेकानेक कामों में उलझी माँ के पास अम्मू के लिए समय ही कहाँ था। वह केवल यही कहकर उसे झिड़क देती- ''क्यों करता है इतनी

बकबक? मुझे काम भी करने देगा अब? जब देखो कभी ये सवाल! कभी वो सवाल! अब अगर तेरे सवाल समाप्त हो गए हों तो जल्दी से किताब खोल ले। पढ़ने बैठ जा अब! तेरे बाबू (पिता) के आने का समय भी हो गया है रे।'' और अम्मू वह तो ''अभी आया।'' कहकर बाहर की ओर दौड़ लगाता।

घर के वातावरण से अच्छा उसे बाहर प्रकृति के बीच रहना अधिक पसंद था। जब भी मुझे बाहर खड़ा देखता वैसे ही पास आ खड़ा होता और वही काम! अपने प्रश्नों की झड़ी लगा देता। ''अच्छा दीदी! बताओ तो जरा– ये बादलों में इत्ता पानी भरा होता है तो भी उड़ते कैसे रहते हैं? इनको तो भूमि पर आना चाहिए न? इतना पानी लेकर ये भारी कैसे नहीं होते दीदी? ये कोहरे का रंग सफेद ही क्यों होता है? बरसातों में कपड़े झट से क्यों नहीं सूख जाते दीदी?'' और न जाने क्या–क्या वह पूछता। उसके सवाल यूँ ही चलते रहते जब तक घर से उसके बुलाने की आवाज नहीं आ जाती। मैं यथा संभव उसकी जिज्ञासाओं को शांत करने का प्रयास करती, साथ ही उसकी बुद्धि के प्रति चकित भी होती।

सर्दियाँ आने से पहले पहाड़ों में मौसम बहुत सुहावना हो जाता है। एक दिन ऐसी ही एक शाम को मैं घूमते हुए ऊपर की सड़क की ओर धीरे–धीरे जा रही थी। तभी पास की झाड़ियों से कुछ खुसफुसाहट सुनाई पड़ी। ''अरेऽऽ! अम्मू! तुम! यहाँ क्या कर रहे हो?'' ''शऽऽऽश!'' मुँह पर अपने नन्हीं सी अँगुली दिखाते हुए उसने मुझे चुप रहने का संकेत किया और फिर नीचे बैठने का इशारा किया।

मैं बैठ गई तब मेरी दृष्टि झाड़ियों के बीच बनाई गई चौड़ी सी जगह की ओ गई जहाँ सबसे छुपकर उसने अपनी अलग ही दुनिया बना रखी थी। मैंने देखा– वहाँ पुराने खिलौनों के भाग, कुछ नट–बोल्ट, कीलें, पुराने

बल्ब, माचिस, मोमबत्ती, छोटी-सी दवाइयों की बोतल, ढक्कन आदि और न जाने क्या-क्या अनेक वस्तुएँ ठीक से सजा रखीं थीं। अपने आश्चर्य को मैं रोक न सकी। मैंने पूछा- ''यह सब क्या है अम्मू?''

''दीदी! यह सब बड़े काम की वस्तुएँ हैं।'' उसने अत्यंत गंभीरता से बताया। ''पर माँ तो कुछ भी समझती नहीं है ना! परसों उसने घर से मेरा यह सब सामान बाहर फेंक दिया था न तो मैं यहाँ ले आया।''

''परसों? परसों कब? परसों तो वर्षा हो रही थी, तुम भी तो सारा दिन अंदर ही थे।'' वह मेरी ओर देखकर हो-हो करता हुआ हँसने लगा, ''आप तो एकदम बुद्धू हो दीदी! परसों थोड़ी! उससे पहले।''

ओह! अब मैं समझी कि वह 'पहाड़ी-परसों' (पहाड़ में बात कितनी भी पुरानी हो उसे परसों ही कहा जाता है।) की बात कर रहा है। बात समझ में आते ही मैं भी उसके साथ हँसने लगी। ''किन्तु तुम इन सब से करोगे क्या?''

मेरा प्रश्न सरल ही था, पर सुनते ही उसने चेहरे पर किसी बड़े की तरह समझदारी छा गई। ''मैं आविष्कार करूँगा। आईंस्टाईन की तरह! उन्होंने भी तो नई-नई चीजें बनाई थीं ना दीदी! मैं भी बना रहा हूँ।'' यह सुनकर मुझे आश्चर्य हो आया, और अधिक जानने की इच्छा के कारण मैंने घूमना स्थगित करते हुए उसके साथ बात करना उचित समझा। ''क्या बना रहे हो तुम अम्मू?'' मैंने उत्सुकता से पूछा। मेरे स्वर में जिज्ञासा साफ थी। अम्मू ने मुझसे आँखें मिलाई और कुछ अविश्वास से पूछा- ''किसी से कहोगी तो नहीं?'' ''नहीं! बिलकुल नहीं!'' कहते-कहते मैंने उसका कोमल हाथ अपने हाथ में लेकर उसे आश्वासन दिया। शायद उसे मुझ पर थोड़ा विश्वास था अत: उसने मुझे अपना कान आगे लाने का संकेत किया और धीमे स्वर में कहा- ''दीदी! एक मशीन बना रहा हूँ।'' ''कैसी मशीन? मेरा मतलब है किस चीज की?'' मेरी हैरानी बढ़ी।

''ओह हो! अभी केवल शुरू करने की सोच रहा हूँ। पूरी बनेगी न तब देखना।'' ''पर अभी बता तो दो! क्या बनाने का सोच रखा है हमारे छोटे आईंस्टाईन ने? हमें भी तो पता चले!''

''अच्छा बताता हूँ।'' कहकर उसने झाड़ियों के पीछे से एक लकड़ी की पुरानी सी पेटी निकाली। मैंने ध्यान से देखा, उसमें एक बेलन के-से भाग से ठोंक-पीटकर एक किसी छोटी साईकिल का पहिया, बड़े जतन से जोड़ा हुआ था। उस पहिये को बेलन से चलाया जा सकता था। और उसको चलाने का हैंडिल बस किसी तरह पेटी के बाहर से जोड़कर लगाया गया था।

कितनी मेहनत से उसने यह सब अकेले किया था, यह सोचकर ही मुझे अम्मू पर प्यार आने लगा। मैंने उसकी बड़ी प्रशंसा की तो प्रसन्नता से उसकी आँखें चमक उठी। आत्मविश्वास से भरकर बोला-

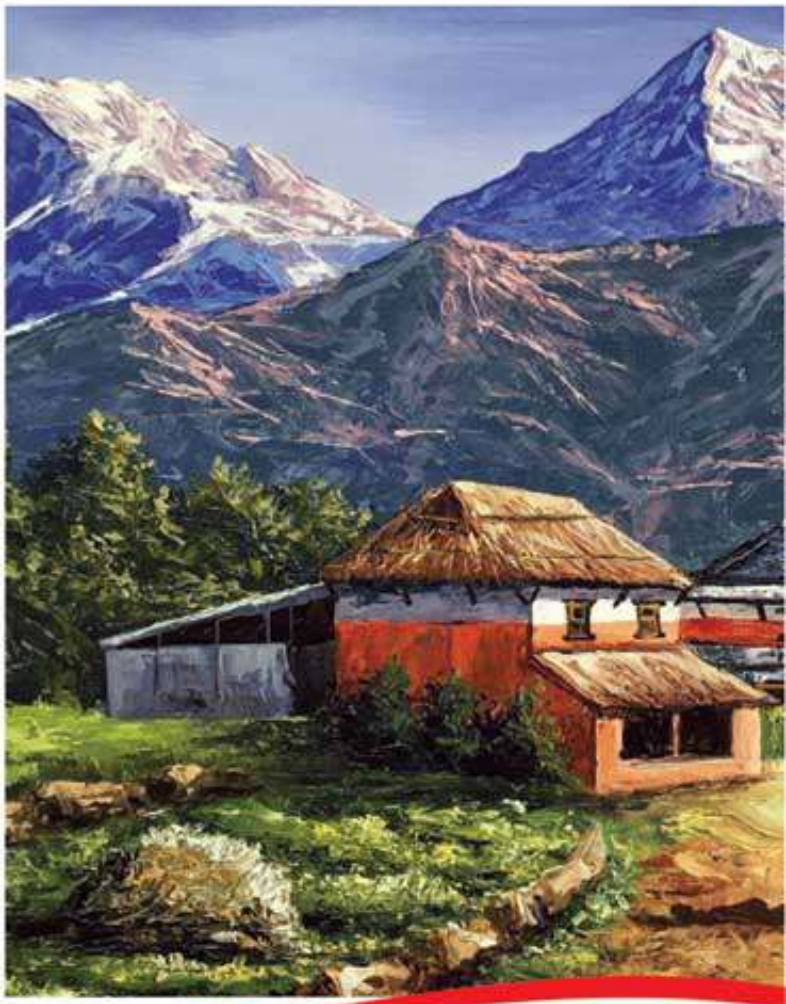

को दिखाऊँगा न तो वे भी चकित हो जाएँगे है ना?'' ''हाँ! बिलकुल! वे ही क्या हम सभी आसपास के लोग भी चकित हो जायेंगे रे!''

मुझसे प्रशंसा पाकर अम्मू ने अपना रहस्य मुझसे साँझा कर दिया कि वह ''सबसे पहले एक तेज हवा फेंकने वाली मशीन बनाएगा ताकि माँ के कपड़े, रजाई–गादी आदि को सुखाने का झंझट समाप्त हो जाए। फिर इसके बाद वह झट से खाना बनाने वाली मशीन भी बनाएगा जिसमें मसाले, तेल और सब्जी डाल देने भर से सब्जी तैयार हो सकेगी आदि।'' बताते–बताते उसकी आँखों में एक अलग ही चमक आती जा रही थी।

देर हो रही थी। मैंने देखा कि धुंधलका गहराने लगा था कि सहसा मैंने उसे जल्दी से घर चलने को कहा और स्वयं भी तुरन्त उठ खड़ी हुई। ''हाँ दीदी! रुको न! मैं भी आता हूँ।'' कहते हुए उसने जल्दी–जल्दी सारा सामान झाड़ियों में छिपाया और पेंट के

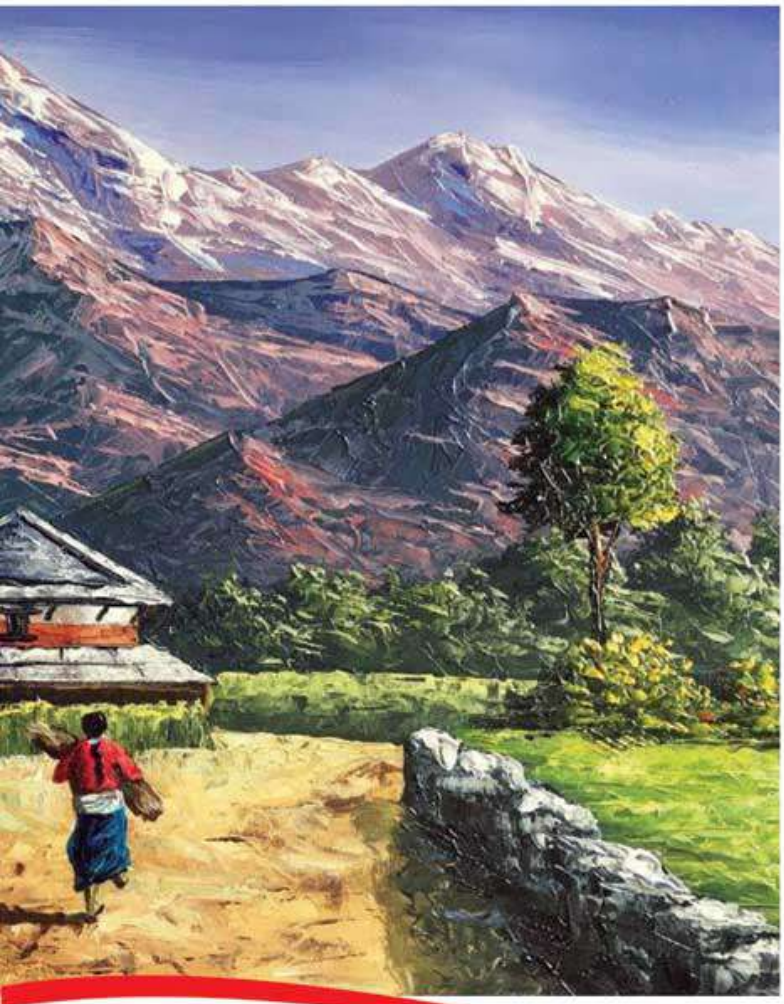

पीछे हाथ साफ करता हुआ पगडंडियों से होकर भागते हुए एक ही साँस में नीचे घर के दरवाजे तक जा पहुँचा। मैं धीरे–धीरे पहाड़ी उतरने लगी।

मेरे मस्तिष्क में अभी तक अम्मू की बातें गूँज रही थी और हृदय में उसका अपनी माँ के प्रति निश्छल प्रेम का सागर लहराता हुआ प्रतीत हो रहा था। इन्हीं विचारों में डूबती–उतरती मैं कब घर पहुँची ज्ञात नहीं। अचानक अम्मू के घर से उसके पिता और चाचा के ऊँचे स्वरों ने मेरा ध्यान खींचा।

वह गुस्से में भरे हुए थे– ''मैं पूछता हूँ कहाँ था तू अभी तक? बोलता क्यों नहीं? कहाँ था? किसके साथ था? दो घंटे से ढूढ़ रहा हूँ।'' कहते हुए चटाक से जोरदार तमाचा उन्होंने अम्मू के गाल पर रख दिया। माँ ने बीच में आकर बचाने का प्रयत्न किया– ''बता क्यों नहीं देता बेटा! बाबू (पिता जी) आज जल्दी आ गए थे, तभी से तुझे पूछ रहे हैं।'' अम्मू डबडबाई आँखों से जमीन की ओर देखता रहा। उसके मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। वह जानता था कि बताने से तो और मार ही पड़ेगी इसलिए चुपचाप खड़ा रहा।

वैसे तो वह पिता का लाड़ला था पर शायद आज उनका मन अच्छा न था या उन्होंने भी शायद आज उत्तर सुनने की जिद ठान ली थी। उसके कंधे पकड़कर फिर पूछा– ''सच–सच बता, कहाँ था इतनी देर से? अम्मू की चुप्पी उनके क्रोध को बढ़ाती जा रही थी। पर अबकी बार चाचा जी ने पुचकार कर पूछा– ''बता बेटा! कोई कुछ नहीं कहेगा! मैं हूँ ना।''

जो बात अम्मू ने चांटा खाकर नहीं बताई थी, वह प्यार से उसके छोटे चाचा जी ने उगलवा ली। मैं भी तब तक वहाँ पहुँच चुकी थी। मेरी उपस्थिति से अम्मू को मानसिक शक्ति मिली, उसने मेरी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा मानो पूछ रहा हो कि सच बताऊँ या नहीं? मैंने उसे आँखों–आँखों में प्यार से सहमति दे दी। वह आत्मविश्वास से भर उठा, उसे

चाचा जी और मेरा साथ मिल गया था। आँखों में चमक लिए उसने अपने भावी सपने और आविष्कार के बारे में बताया। उसके विचार सुनकार चाचा जी को सुखद आश्चर्य हुआ। वे स्वयं बिजली विभाग में जूनियर इंजीनियर थे। वे बच्चे के भीतर छिपी प्रतिभा से अभिभूत हो उठे और अपने बड़े भाई को ऐसे बच्चे के पिता होने के लिए गौरव महसूस करने को कहा।

दाज्यू! (बड़ा भाई) आप तो खुशकिस्मत ठहरे! आप समझ नहीं रहे हो? अपना 'अम्मू' सब बच्चों में अलग हुआ। चाचा जी ने गर्वपूर्ण शब्दों में कहा। लेकिन..... महेश! पढ़ाई..... पिता जी के वाक्य को पूरा करने से पूर्व चाचा जी ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा– ''उसकी चिंता मत करिए दद्दा! (बड़ा भाई), अम्मू पढ़ भी लेगा।

मैंने उन्हें समझाते हुए कहा– ''अम्मू में असाधारण बुद्धि है, भाई जी! उसे बाकी और बच्चों की तरह हर समय किताबों को रटने की आवश्यकता नहीं है। आप देखना, वह कम समय में भी पढ़कर अच्छे अंकों से परीक्षा पास कर लेगा।'' मैंने भी उसके पिता को उसका साथ देने को कहा।

आखिर उसके माता–पिता ने हमारी बातों को समझा और अम्मू के चेहरे पर प्रसन्नता दौड़ गई। पिता के चेहरे से चिंता के भाव के स्थान पर गर्व झलकने लगा। उन्होंने तुरन्त अम्मू का माथा चूमकर गले से लगा लिया और माँ की ओर मुड़कर बोले– ''अरे! तुम अभी तक यहीं खड़ी हो? जाओ जल्दी से सबके लिए खाना लगाओ। आज अम्मू मेरे साथ खाएगा।''

फिर अम्मू की ओर देखकर बोले– ''बेटा! कल मैं स्वयं तेरी प्रयोगशाला देखने चलूँगा। ठीक है? मैं और महेश तेरा सारा सामान यहीं ले आएँगे। दूर जाने की क्या आवश्यकता हैं? छत पर जाने वाली पीछे की सीढ़ियों के नीचे बना देते हैं तेरा अड्डा। अम्मू ने प्यार से पिता का हाथ थाम लिया।

कविता

पंचतत्व

– अंकित शर्मा 'इषुप्रिय'

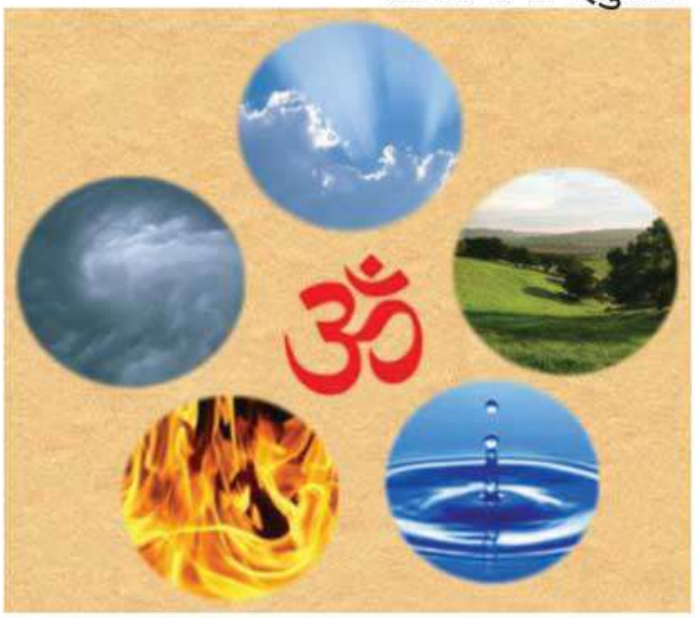

आकाश

आसमान है अपरंपार।
कोई न पहुँचा इसके पार।
ऊँचे–ऊँचे उड़ते पक्षी।
इसमें बादल और बयार।।

पवन

बादल को बुलवाती है।
बारिश खूब कराती है।
हवा साँस देकर हमको।
जिंदा हमें रखाती है।।

अग्नि

सर्दी दूर भगाती आग।
खाना रोज पकाती आग।
छू लेता हूँ जब इसको।
मेरा हाथ जलाती आग।।

जल

सबकी प्यास बुझाता जल।
फसलों को लहराता जल।
इसके बिना नहीं जीवन।
काम सभी के आता जल।।

भूमि

मिट्टी से घरबार बनाते।
खेती करते फसल उगाते।
खेलकूद करते धरती पर।
जीवन सारा सदा बिताते।।

– सबलगढ़ (म. प्र.)

चींटी खेले मोनोपोली

– रोचिका अरुण शर्मा

छुट्टियाँ हुई तो रोली और उसका भाई पोली सारा दिन खेलते रहते। खेलते समय झगड़ा करना शुरू होता तो उनकी माँ को बीच–बचाव करने आना ही पड़ता।

''माँ क्यों न आप भी हमारे साथ खेलें, पोली तो अपनी हार कभी मानता ही नहीं। यदि आप हमारे साथ खेलें और हमारी निर्णायक (रेफरी) बन जाएँ तो कितना अच्छा हो।''

''अच्छा बाबा! ठीक है, मैं आ जाती हूँ खेलने, पर फिर तुम्हें मेरी बात माननी होगी।''

''हाँ माँ आप भी हमारे साथ खेलेंगी तो बड़ा मजा आएगा, आओ न माँ!'' पोली अपनी माँ का हाथ अपनी ओर खींचकर उनसे खेलने का आग्रह कर रहा था।

अब प्रतिदिन अपनी माँ के साथ खेलना उन्हें बहुत अच्छा लगता।

एक दिन पिताजी भी घर पर ही थे सो रोली, पोली दोनों बोले–''बाबा! आप भी आओ न हमारे साथ खेलने।''

''ठीक है।'' पिताजी ने कहा।

आज वे जमीन पर बैठकर बोर्ड गेम 'मोनोपोली' खेल रहे थे।

''बाबा यह लीजिए आपके नोट, अब डाइस रोल करेंगे और जितने नंबर आएँगे उतने खाने आगे बढ़ना है। जब किसी प्रॉपर्टी के खाने में रुकें, तो रुपए बैंक में देकर प्रॉपर्टी खरीद सकते हैं।''

''जिसकी अधिक मोनोपोली उसी की जीत, ठीक है बाबा? पोली ने खेल समझाया।

तभी एक चींटी उनके पास घूमने लगी। रोली ने उसे मोनोपोली में मिले नोट से एक ओर कर दिया।

''माँ देखो न यह चींटी फिर से आ गई, मैं बार–बार इसे कागज से उधर करती हूँ यह फिर वापस इधर ही आ जाती है।'' रोली ने कहा।

''इसे भी मोनोपोली खेलना है हमारे साथ।'' पोली ने खिलखिलाते हुए कहा।

''क्या चींटी कोई मोनोपोली खेलती है?'' रोली ने आँख मटकाई।

हाँ–हाँ चींटियाँ भी मोनोपोली खेलती हैं बाबा ने भी गर्दन हिलाई।

''वह कैसे?'' रोली और पोली दोनों ने ही प्रश्न किया।

''जब चींटियाँ चलती हैं तो वे फेरोमोन नाम का रसायन छोड़ती जाती हैं, फेरोमोन की गंध दिशा संबंधी सूचना देती है। ताकि वह उस रास्ते को याद

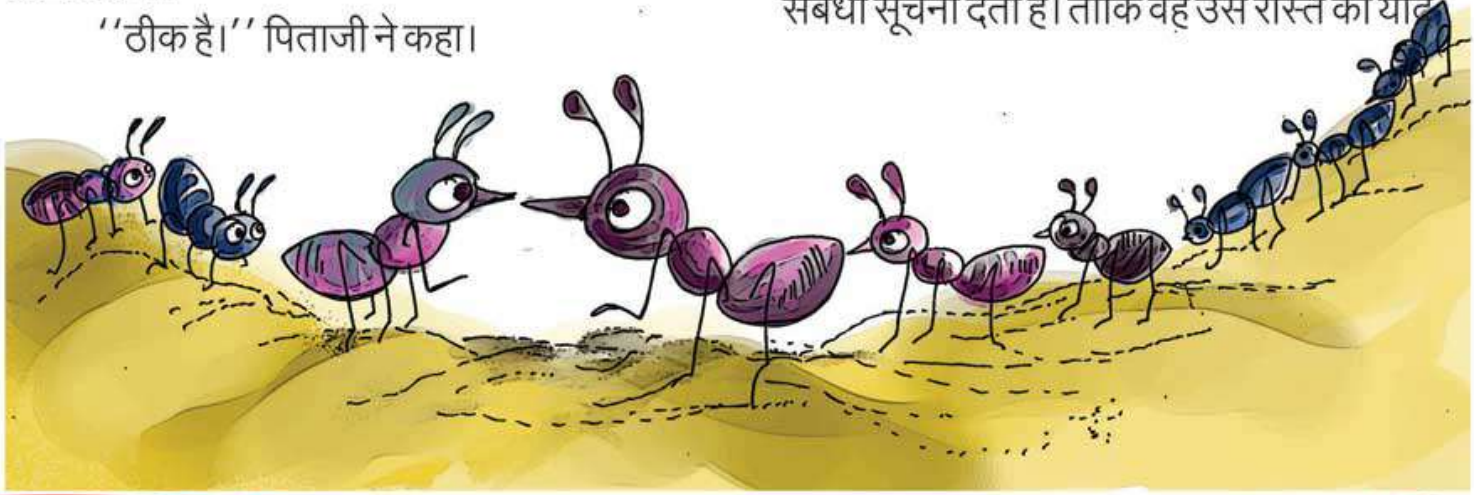

रख सके और उसी रास्ते वापस लौट सकें। इस प्रकार जब वे भोजन की खोज में निकलती हैं तो अपने बिल में उसी रास्ते लौट आती हैं। हुईं न रास्तों की मोनोपोली ?'' बाबा बोले।

तो क्या वे किसी को उस रास्ते नहीं आने देतीं ?

ऐसा नहीं यह तो बहुत ही छोटा-सा जीव है। पर हाँ! उन्हें कितना भी दूसरे रास्ते पर मोड़ो वे अपने रास्ते पर अपना अधिकार समझ वापस वहीं लौट आती हैं। यह रास्ता उनकी प्रॉपर्टी बन जाता है, जब तक वे वापस अपने बिल में न पहुँच जाए।

''हम्म्म'' रोली पोली एक साथ बोले।

''एक बात और जब ये एक साथ समूह में खाने की तलाश में निकलती हैं तो एक सेना की तरह एक दूसरे के पीछे एक कतार में चलती हैं। पहली चींटी जो फेरोमोन छोड़ती है उसकी गंध की दिशा में अन्य चींटियाँ चलती हैं।'' माँ ने कहा।

अच्छा ?

''अरे! अभी भगाया था फिर ये चींटी आ गई हमारे पास।'' रोली बोली।

''एक विचार मेरे मन में आया है। एक बार हम यहाँ से हट जाते हैं और चींटी को अपने घर वापस जाने के लिए रास्ता देते हैं, जब ये चली जाएगी तो हम फिर से यहाँ खेलने बैठ जाएँगे। क्योंकि इस रास्ते पर तो इस चींटी की मोनोपोली बन गई है।''

पोली ने मोनोपोली का बोर्ड वहाँ से उठाते हुए कहा।

''हाँ, यही ठीक है।'' रोली ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

''वाह पोली! तुम तो बहुत समझदार निकले।'' माँ व पिताजी ने उसकी पीठ ठोकी। रोली भी दम लगाकर उसकी पीठ ठोकने लगी।

– चेन्नई

छः अंगुल मुस्कान

एक व्यक्ति :– यदि तुमने मेरे कुत्ते का कान खींचा, तो मैं तुम्हारे कान खींचूँगा।

बच्चा :– काका! यदि मैं कुत्ते की पूँछ खीचूँ तो आप क्या करेंगे ?

पिता :– बेटे! तुम विद्यालय से रोते हुए क्यों लौटे ?

बेटा :– गृहकार्य करते हुए गलतियाँ आप करते हैं और पिटता मैं हूँ।

* * * * *

प्रवीण :– कैलाश! मैंने तुम्हारे दादाजी को भूत वाली कहानी सुनाई, तो उन्होंने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

कैलाश :– क्यों झूठ बोलते हो। उनके तो सारे दाँत गिर चुके हैं। दाँतों तले अँगुली कैसे दबाएँगे ?

* * * * *

एक कैदी :– तुम्हें रस्सी का एक टुकड़ा चुराने पर जेल भेज दिया गया। यह तो ज्यादती है।

दूसरा कैदी :– भाई! वास्तव में उस रस्सी के टुकड़े में एक भैंस बँधी थी।

नदी किनारे गाँव उगेंगे

– राम करन
बस्ती (उ. प्र.)

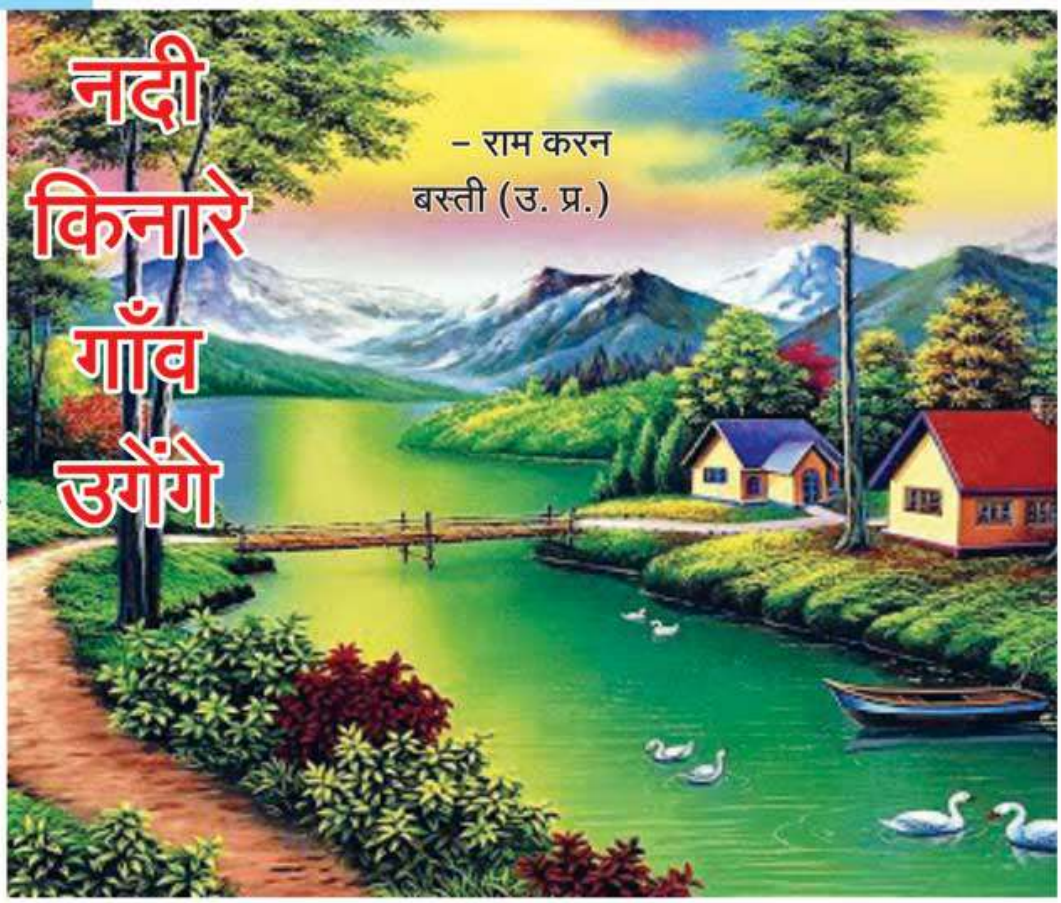

लौकी–कद्दू और शतपुतिया,
हरा मटर औ गंजी बतिया।
आलू–होरहा खूब भुनेंगे,
नदी किनारे गाँव उगेंगे।।
सरसो, पालक, मेथी, साग,
नरम चटाई, बोरसी आग।
दादी के मुँह भजन सुनेंगे,
नदी किनारे गाँव उगेंगे।
आँवला, अमला और टिकोरा,
धनिया की ले चटनी थोड़ा।
छटकारे से स्वाद भरेंगे,
नदी किनारे गाँव उगेंगे।
बछड़ा दौड़े, गाय रंभाएँ
डाल पे चिड़िया ची–ची गाएँ।
तड़के मुर्गे बांग भरेंगें,
नदी किनारे गाँव उगेंगे।

विज्ञप्ति

एक कक्षा : एक किताब

सूर्या फाउण्डेशन देश के विकास के लिए जन–जीवन को प्रभावित करने वाले विषयों पर चिंतन–मनन और शोध के लिए समर्पित है। सूर्या फाउण्डेशन अपने कई प्रकल्पों थिंक टैंक, आदर्श गाँव योजना, युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु व्यक्तित्व विकास शिविर, स्कूल भारती ऑर्गेनाइजेशन (SBO), शिक्षकों के लिए आचार्य व्यक्तित्व विकास शिविर (TPDC) एवं वनवासी बालकों के निवासीय सैनिक स्कूल (गुजरात) द्वारा देश के नवनिर्माण में कार्यरत है।

सूर्या फाउण्डेशन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) २०२० की संस्तुतियों को क्रियान्वित करके प्राथमिक कक्षाओं हेतु सूर्य भारती कक्षा १ से कक्षा ५ तक प्रकाशित की है। सूर्य भारती पुस्तकें भारत सरकार (NCERT) द्वारा प्रकाशित सीखने–सिखाने के प्रतिफलों (Learning Outcomes) के आधार पर बनी हैं।

सूर्या फाउण्डेशन ने सन २००० से 'एक कक्षा–एक किताब' (ALL IN ONE) परियोजना के अन्तर्गत जिसमें सभी विषयों को समेकित (Integrated) करने में प्रयासरत है जिसमें ❊ बस्ते का बोझ कम करना ❊ किताबों की संख्या कम करना, कम खर्चीली किताबें उपलब्ध कराना। ❊ बालकेंद्रित शिक्षा (Child Centered) ❊ मूल्याधारित शिक्षा (Value Based) ❊ क्रियाकलाप आधारित शिक्षा (Activity Oriented) बच्चों में देशभक्ति, भारतीय संस्कृति का भाव जगाना ❊ राष्ट्रीय और स्थानीय पाठ्यक्रम में मूल अवधारणाओं आदि का समावेश है। विशेष जानकारी ०११–२५२५३६८१ या २५२६१५८८ पर प्राप्त करें।

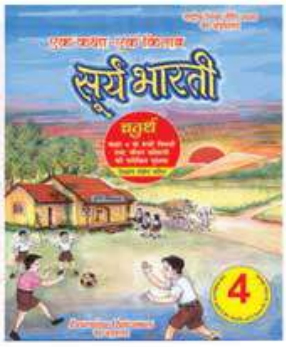

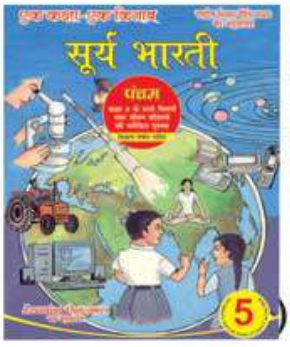

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बालकहानीकार **श्री कमल चौपड़ा** के दो बाल कहानी संग्रह

गजराज की वापसी

पशुपक्षी सदैव मानव के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं। वे पर्यावरण चक्र में भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे प्राणियों के प्रति रोचक कहानियों से संवेदना जगाने वाली यह बालकथाओं की पुस्तक।

मूल्य २९५/-

प्रकाशक –आत्माराम एंड संस
१३७६, कश्मीरीगेट, दिल्ली–११०००६

चालाकी नहीं चलेगी

मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करने में जीवन मूल्यों की महती भूमिका है। बिना नैतिकता एक अच्छा नागरिक बनना असंभव है। ऐसे ही मूल्य बोधों से पगी है ये बाल कहानियाँ।

मूल्य २९५/-

प्रकाशक –ग्लोबल एक्सचेंज पब्लिशर्स
१३६२, कश्मीरीगेट, दिल्ली–११०००६

रंगीली बुलेट और वीर

मूल्य ११०/-
प्रकाशक–प्रकाशन विभाग
सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली–११०००३

बाल साहित्य सर्जकों में श्री **समीर गांगुली** एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत बाल उपन्यास उनकी रोचक शैली व सुघड़ित कथा श्रृंखला से सम्पन्न कृति है।

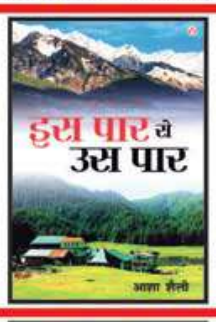

इस पार से उस पार

मूल्य १५०/-
प्रकाशक–डायमण्ड पॉकेट बुक्स
प्रा. लि. X३० ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फैज–२, नई दिल्ली

आशा शैली बालसाहित्य की लोकप्रिय रचनाकार है। इस बार उनकी कलम ने आपके लिए रचा है हिमालयीन जीवन व प्रकृति की गोद में ले चलने वाला रोचक बाल उपन्यास।

कलकत्ता से अंडमान तक

मूल्य १८०/-
प्रकाशक–साहित्य भूमि
ए ३/५ ए, मोहन गार्डन,
नई दिल्ली–११००५९

आशा शैली का ही यह एक और रोचक बाल उपन्यास है जिसमें आप कलकत्ता से अंडमान द्वीप समूह तक उपन्यास के पात्रों के साथ एक रोमांचक यात्रा का अनुभव प्राप्त करेंगे।

काश! मैं चिड़िया होती

मूल्य १००/-
प्रकाशक–मधुर प्रकाशन, मिशन कॉलोनी, भण्डारी पारा, डोण्डी
जि. बालोद (छ. ग.) ४९१२३०

श्री टीकेश्वर गब्दीवाला का नाम बाल साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकारों में गणनीय है। प्रस्तुत संकलन में उनकी विविध बालप्रिय एवं बालोपयोगी विषयों पर सुमधुर ५१ बाल कविताएँ हैं।

शिशु गीत

लाई लउवा लप्प

– शोभनाथ लाल

लाई लउवा लप्प,
दूध मलाई गप्प।
रोज रोज हम खाएँगे,
नानी के घर जाएँगे।
कौआ बोला काँव से,
बिल्लू आया गाँव से।
मुर्गी गई भाग,
अम्मा गई जाग।
धमा चौकड़ी ठप्प,
लाई लउवा लप्प।

– गाजीपुर
(उ. प्र.)

स्व. श्री शोभनाथ लाल बाल साहित्य जगत के प्रमुख रचनाकारों में गणनीय रचनाकार हैं। ०७ फरवरी १९६३ में पदमपुर (गाजीपुर) में जन्में ये महान बाल रचनाकार २२ जनवरी २००३ को हमारे बीच नहीं रहे पर बाल साहित्य को उनका अवदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

कविता

सर्दी है ऋतुओं की रानी

– लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'

सर्दी जी की सुनो कहानी।
सर्दी है ऋतुओं की रानी।।
सर्द हवा की लाती लहरी।
सबको भाती धूप सुनहरी।।

रंग–बिरंगे फूल खिलाती।
मीठे–मीठे फल ले आती।।
सेहत का तुम रखना ध्यान।
गुरुगण का रखना सम्मान।।
गोमाता का दूध पिओगे।
सौ बरसों की उम्र जिओगे।।
खेलो–कूदो योग करो तुम।
क्षण–क्षण का उपयोग करो तुम।।
विद्या ही जीवन का धन है।
मानवता का नंदनवन है।।

– छतरपुर (म. प्र.)

आँखों की समस्या

– तपेश भौमिक

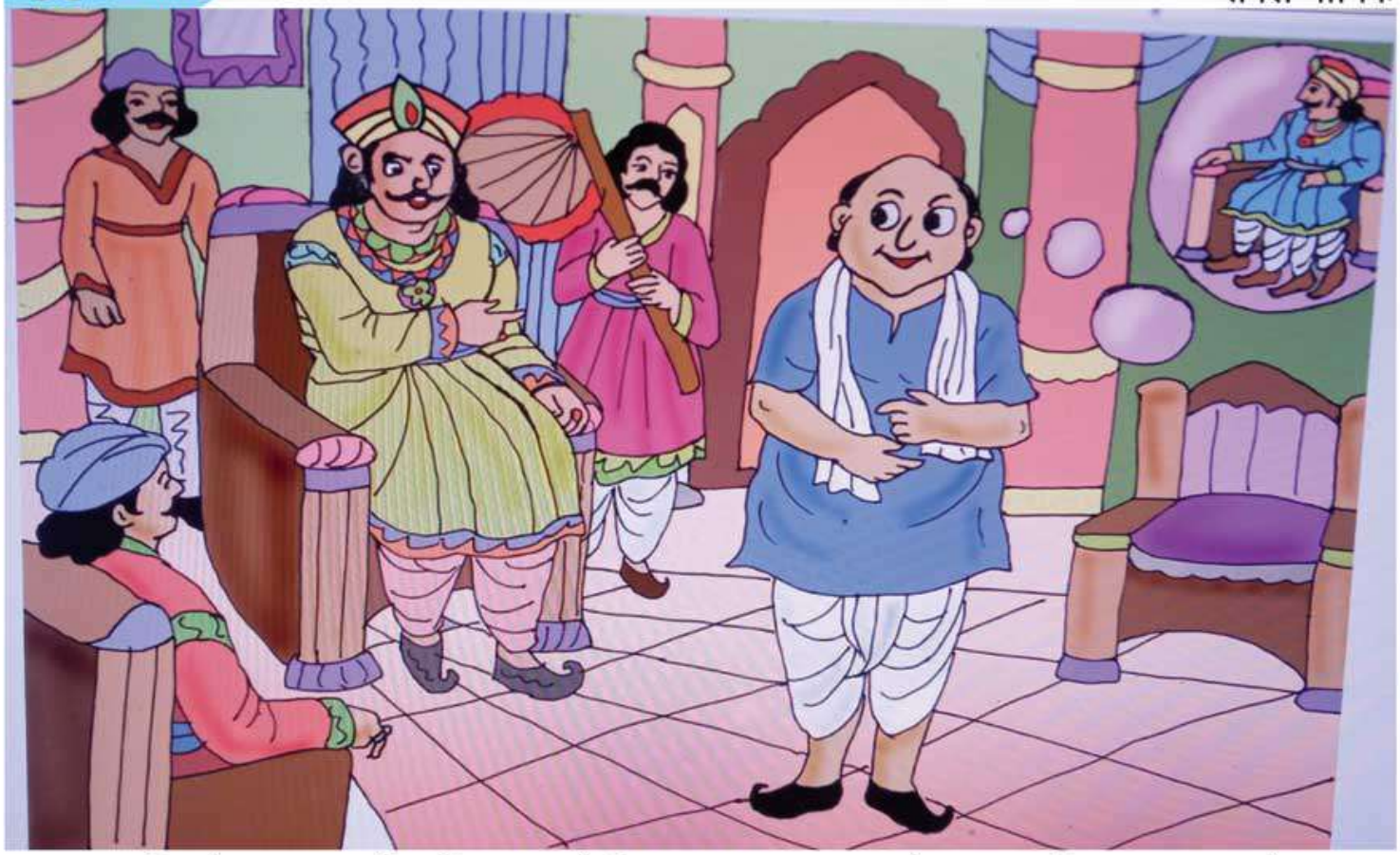

एक दिन गोपाल दरबार में नहीं आए। दूसरे दिन महाराज ने बुला भेजा। महाराज की आज्ञा मानकर जाना ही था। वह जब दरबार में पहुँचे तो महाराज ने पूछा।

''क्यों गोपाल! कल क्यों नहीं आए?''

''जी! मेरी आँखों में समस्या थी। फिर भी कल घर से चलकर आया था।''गोपाल का स्पष्ट उत्तर था।

''फिर दरबार में तो तुम दिखे नहीं जी?'' महाराज ने आश्चर्य प्रकट किया।

''जी, आप सही कह रहे हैं। असल में मुझे आँख की गड़बड़ी के कारण सब कुछ दो–दो दिख रहे थे। मैं जब दरबार के पास आया तो दो दरबार दिखने लगे, अब मैं इस उधेड़–बुन में पड़ गया कि एक और राजा हो गए क्या! मैं अब किस दरबार में प्रवेश करूँ? मैंने तो आपका नमक खाया है, आपके ही दरबार में मुझे हाजरी लगानी थी। अब कहीं गलती से दूसरे राजा के दरबार में चला जाता तो आपका अपमान होता, इसलिए मैंने वापस घर लौट जाना ही ठीक समझा। इसलिए मैं उल्टे पाँव लौट गया।''

''तब तो तुम्हारी एक समस्या हल हो गई। दो दिन पहले ही तुम बता रहे थे कि हल में जुतने वाले दो बैलों में से एक मर गया है, इसलिए एक बैल की अत्यधिक आवश्यकता है। अब बचे हुए उस एक बैल को तुम दो देखोगे। इससे तुम्हारी समस्या हल हो जाएगी।''

महाराज ने उसकी बातों की चुटकी लेते हुए कहा।

''जी हाँ महाराज! आपका अनुमान तो ठीक है पर...! अभी तो मैं आपके दो पैरों को चार देख रहा हूँ। अब अगर आप अपने चार पैर मान लेते हैं तो मैं भी अपने दो बैल मान लूँगा।''

– कूचबिहार (पं. बंगाल)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

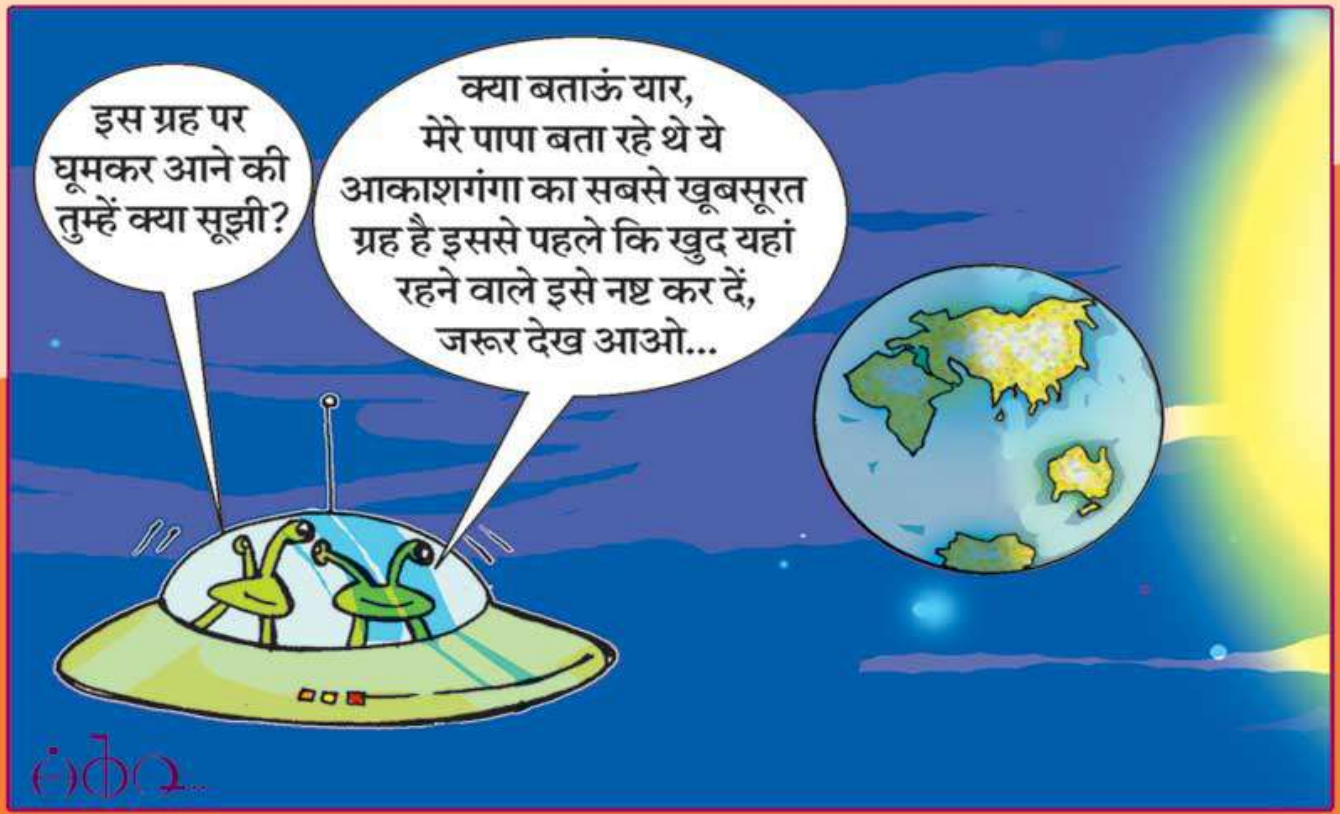

पुस्तक समीक्षा

खिलते फूलों से

समीक्षक – नीलम राकेश, लखनऊ

जैसे फूलों की अपनी खुशबू और रंगों की अपनी विराट दुनिया है। वैसे ही बच्चों की भी अपनी एक सतरंगी खिलखिलाती दुनिया होती है। यह दुनिया यूँ ही सतरंगी बनी रहे और निरंतरता के साथ खिलखिलाए इसके लिए प्रयास आवश्यक है। बचपन जीवन का सबसे सुंदर पड़ाव है। इनका बचपन यादों की खूबसूरत धरोहर बन सके यह हम सब बड़ो का दायित्व है। क्योंकि इनकी किलकारी ही हमारे जीवन में इंद्रधनुष खिलाती है और हमारे जीवन में सपनों के द्वार खोलती है।

अपने इस दायित्व को हमारे अग्रज श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना जी ने पूरी निष्ठा के साथ निभाया है देश की प्रतिष्ठित पत्रिका देवपुत्र के संपादकीय 'अपनी बात' के प्रत्येक अंक में। हर अंक में उनकी लेखनी चाहे 'राष्ट्र चिंतन' की बात कर रही हो या 'प्रेणा और संस्कार' की या 'महापुरुष का जीवन' अथवा 'पर्व और उत्सव' पर

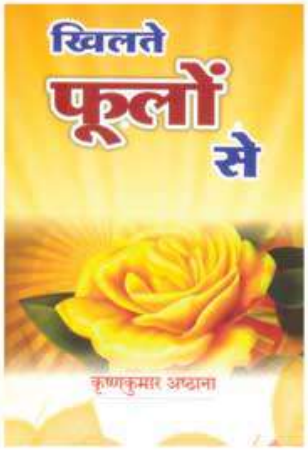

चल रही हो, वह इस नन्हीं पौध को खाद पानी दे रही होती है। आदरणीय अष्ठाना जी की लेखनी से निकला हर शब्द बच्चों को सही दिशा देने का प्रयास कर रहा होता है। और उन्हें जीवन की रणभूमि के लिए तैयार कर रहा होता है।

इसीलिए २००७ में उनके इन संपादकीयों को पुस्तकाकार किया गया 'खिलते फूलों से' के नाम से। इस पुस्तक की इतनी अधिक माँग आई कि २०२० में इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। आज अष्ठाना दादा के आशीर्वाद के साथ यह पुस्तक 'खिलते फूलों से' मुझे प्राप्त हुई है। खजाना मिलने वाली खुशी के साथ मन प्रसन्नता से खिला हुआ है। दादा को बधाई देने के साथ–साथ मैं उनके सामने नतमस्तक भी हूँ।

समाचार

डॉ. विकास दवे को मानद डी. लिट्

कोलकाता। म. प्र. साहित्य अकादमी के निदेशक एवं देवपुत्र के मानद संपादक डॉ. विकास दवे को केन्द्र सरकार के अनेक मंत्रालयों से मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठित संस्थान 'हेम्स' (हिन्दुस्थान आर्टस् एंड म्यूजिक सोसायटी) ने अध्ययन की सर्वोच्च उपाधि 'डी. लिट्' (मानद) से समलंकृत किया। पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. जसराज, पं. विश्वमोहन भट्ट, सितारा देवी आदि प्रसिद्ध विभूतियों जो प्राय: पद्म पुरस्कारों से सम्मानित है ऐसे विश्व विख्यात कलावंतों को उपाधि से अलंकृत करने वाले इस संस्थान ने प्रथम बार किसी साहित्य के विद्वान को डी. लिट् की मानद उपाधि प्रदान की है। साहित्य क्षेत्र में इस संस्थान ने ऐसे सम्मान का श्री गणेश डॉ. दवे को सम्मानित कर किया है।

देवपुत्र परिवार डॉ. विकास दवे को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए अशेष मंगलकामनाएँ एवं बधाई देता है।

बाल साहित्य भारती सम्मान

मुरादाबाद। देश के जानेमाने बाल साहित्यकार डॉ. राकेश चक्र को दिनाँक २८ नवम्बर को राष्ट्रीय स्तर पर उ. प्र. सरकार द्वारा दिया जाने वाला 'बाल साहित्य भारती सम्मान' प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उ. प्र. के कार्यकारी विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सदानन्द गुप्त एवं उ. प्र. हिन्दी संस्थान के निदेशक श्री पवन कुमार द्वारा शॉल, प्रतीक चिन्ह एवं ढाई लाख रुपए की धनराशि भेंट की।

बसन्त

– सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा'

अमराई में कोयल बोली
मुंडेरों पर चिड़िया,
ऋतु बसन्त की फिर आई है
देखो कितनी बढ़िया।

चारों ओर हुई हरियाली
पीली सरसों फूली,
गेहूँ की बाली लहराई
अलसी खुश हो झूली।

फूल खिले पौधों के ऊपर
आकर बोली तितली,
हँसने मुस्काने से मिलती
मन को खुशियाँ असली।

भँवरे ने भी गुनगुन करके
गीत मधुर है गाया,
बोले खुश रहने वालों ने
प्यार जगत का पाया।

हवा बह रही भीनी-भीनी
सब कुछ लगे सुहाना,
नव उमंग का कारण बनता
ऋतु बसन्त का आना।

इन वासन्ती रंगों को जब
जीवन में भर लेंगे,
तब पतझर की पीड़ा को भी
हँसकर सहज सहेंगे।

– कोटा (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना